

मलयाळम माध्यम
डिप्लोमा पाठ्यक्रम

© C.H.D. Govt. of India KIT-9	पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग ഡിപ്പാർട്ട്മെന്റ് ഓഫ് കറസ്പോണ്ടൻസ് കോഴ്സസ് केंद्रीय हिंदी निदेशालय സെൻട്രൽ ഹിന്ദി ഡയറക്ടറേറ്റ്	പാഠ പാഠം } 17 & 18
-------------------------------------	---	-----------------------

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम
ഹിന്ദി ഡിപ്ലോമ കോഴ്സ്

पाठ/പാഠം— 17

ഉള്ളടക്കം

- 1.0 പാഠഭാഗത്തെക്കുറിച്ച്
യൂണിറ്റ് —1
- 2.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്
- 3.0 പാഠം—सुखमय जीवन : पं० चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'
- 4.0 പുതിയ പദങ്ങൾ
- 5.0 കഥാ സംഗ്രഹം
യൂണിറ്റ് —2
- 6.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്
- 7.0 പാഠം -छोटा जादूगर : जयशंकर प्रसाद
- 8.0 പുതിയ പദങ്ങൾ
- 9.0 കഥാ സംഗ്രഹം

1.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

ഈ പാഠത്തിൽ രണ്ടു ചെറുകഥകൾ ഉൾപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നു. ഇവയിൽ ഒന്നാമത്തേത് പ്രസിദ്ധ ഹിന്ദി കഥാകൃത്തായ ചന്ദ്രധർ ശർമ്മ ഗുലേരിയും രണ്ടാമത്തേത് സുപ്രസിദ്ധ സാഹിത്യകാരനായ ജയശങ്കർ പ്രസാദും എഴുതിയിട്ടുള്ളതാണ്. ഈ രണ്ടു കഥകളും കഥാരചനാ രീതിയിൽ വിഭിന്ന ശൈലിയിലുള്ളവയാണ്.

യൂണിറ്റ് —I

2.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

ആനന്ദപ്രദമായ കുടുംബ ജീവിതത്തെ കുറിച്ച് ഒരു പുസ്തകം രചിച്ച വ്യക്തിയുടെ കഥയാണ് 'सुखमय जीवन' എന്ന ശീർഷകത്തിൽ പ്രതിപാദിച്ചിട്ടുള്ളത്. എന്നാൽ ഇതിന്റെ ലേഖകൻ അവിവാഹിതനായിരുന്നു. ഒരിക്കൽ അദ്ദേഹം സുന്ദരിയായ ഒരു പെൺകുട്ടിയെയും അവളുടെ രക്ഷിതാക്കളെയും പരിചയപ്പെട്ടു. 'सुखमय जीवन' എന്ന പുസ്തകത്തിന്റെ ലേഖകൻ എന്ന നിലയിൽ അദ്ദേഹം വിവാഹിതനാണെന്നു അവർ കരുതി. എന്നാൽ അദ്ദേഹം പെൺകുട്ടിയോടു വിവാഹാഭ്യർത്ഥന നടത്തുകയും, താൻ ഒരു അവിവാഹിതനാണെന്ന വസ്തുത അവരെ അറിയിക്കുകയും ചെയ്തപ്പോൾ അവർ അത്ഭുതപ്പെട്ടു.

ഈ കഥയുടെ ഭാഷ ഗ്രാമീണമാണ്. സംഭാഷണ ശൈലിയും വൈവിധ്യമാർന്ന വർണ്ണനകളും കഥയെ രസകരമാക്കുന്നു. മൂലകഥയുടെ സംഗ്രഹിത രൂപമാണ് താഴെ ചേർത്തിരിക്കുന്നത്. ഭാഷയിലും ഭാവത്തിലും തിനിമ നിലനിർത്താൻ ശ്രമിച്ചിട്ടുണ്ട്.

3.0 പാഠം

सुखमय जीवन

पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी

(1)

1. परीक्षा देने के पीछे और उसके फल निकलने के पहले के दिन किस बुरी तरह बीतते हैं, यह उन्हीं को मालूम हैं जिन्हें उन्हें गिनने का अनुभव हुआ है। सुबह उठते ही परीक्षा से आज तक कितने दिन गए, यह गिनते हैं खाने बैठे हैं डाकिए के पैर की आहट आई—कलेजा मुँह को आया। मुहल्ले में तार का चपरासी आया कि हाथ-पाँव काँपने लगे। न जागते चैन, न सोते।

मेरा भी बुरा हाल था। एल०एल०बी० का फल अब की और भी देर से निकलने को था—न मालूम क्या हो गया था, यह तो कोई परीक्षक मर गया था या उसको प्लेग हो गया था। उसके पर्चे किसी दूसरे के पास भेजे जाने थे। रात-भर नींद नहीं आई थी, सिर घूम रहा था। अखबार पढ़ने बैठा कि देखता क्या हूँ कि चार-पाँच पंक्तियाँ उल्टी छाप दी हैं। बस, अब नहीं सहा गया—सोचा कि घर से निकल चलो, बाहर ही कुछ जी बहलेगा। लोहे का घोड़ा उठाया कि चल दिए।

2. बाइसिकिल भी गजब की चीज़ है। न दाना माँगे, न पानी, चलाए जाइए जहाँ तक पैरों में दम हो। सड़क में कोई था ही नहीं, कहीं-कहीं किसानों के लड़के और गाँव के कुत्ते पीछे लग जाते थे। मैंने बाइसिकिल को और भी हवा कर दिया। सोचा कि मेरे घर सितारपुर से पंद्रह मील पर कालानगर है। वहाँ की मलाई की बरफी अच्छी होती है और वहीं मेरे एक मित्र रहते हैं, वे कुछ सनकी हैं। चलो, उन्हीं से सिर खाली करें।
3. फिस्सूस् बाइसिकिल की फूँक निकल गई। पंप साथ नहीं था और नीचे देखा तो जान पड़ा कि गाँव के लड़कों ने सड़क पर ही काँटों की बाड़ लगाई है। उन्हें भी दो गालियाँ दी पर उससे तो पंक्चर सुधरा नहीं। पास के मील के पत्थर पर देखा कि काला नगर यहाँ से सात मील है। दूसरे पत्थर के आते-आते मैं बेदम हो लिया था।

(2)

4. “बाबूजी, क्या बाइसिकिल में पंक्चर हो गया है?”

एक तो चश्मा, उस पर रेत की तह जमी हुई, उस पर ललाट से टपकते हुए पसीने की बूँदें, गर्मी की चिढ़ और काली रात की-सी लंबी सड़क—मैंने देखा ही नहीं था कि दोनों ओर क्या है। यह शब्द सुनते ही सिर उठाया, तो देखा कि एक सोलह-सत्रह वर्ष की कन्या सड़क के किनारे खड़ी है।

“हाँ, हवा निकल गई है और पंक्चर भी हो गया है। पंप मेरे पास है नहीं। कालानगर बहुत दूर तो है नहीं, अभी जा पहुँचता हूँ।”

अंत का वाक्य मैंने सिर्फ़ ऐंठ दिखाने के लिए कहा था। मेरा जी जानता था कि पाँच मील सौ मील के-से दिख रहे थे।

“इस सूरत में तो आप कालानगर क्या कोलकाता पहुँच जाएँगे। जरा भीतर चलिए, कुछ जल पीजिए। चाचाजी की बाइसिकिल में पंप है और हमारा नौकर गोविंद पंचर सुधारना भी जानता है।”

“नहीं, नहीं”—

“नहीं, नहीं क्या, हाँ, हाँ”

5. यह कहकर बालिका ने मेरे हाथ से बाइसिकिल छीन ली और सड़क के एक तरफ हो ली। मैं भी उसके पीछे चला। देखा कि एक कँटीली बाढ़ से घिरा बगीचा है जिसमें एक बैंगला है। यहीं पर कोई ‘चाचाजी’ रहते होंगे, परंतु यह बालिका कैसी.....

मैंने चश्मा रूमाल से पोंछा और उसका मुँह देखा। एक गुलाबी साड़ी के नीचे चिकने काले बालों से घिरा हुआ उसका मुख-मंडल दमकता था और उसकी आँखें मेरी ओर कुछ दया, कुछ हँसी और कुछ विस्मय से देख रही थीं। मैंने एक सैंकड में सोचा और निश्चय कर लिया कि ऐसी सुंदर आँखें त्रिलोक में न होंगी और यदि किसी स्त्री की आँखों को प्रेम-बुद्धि से कभी देखूँगा तो इन्हीं को।

6. “आप सितापुर से आए हैं। आपका नाम क्या है?”

“मैं जयदेवशरण वर्मा हूँ। आपके चाचाजी—”

‘ओह-हो, बाबू जयदेवशरण वर्मा, बी० ए०, जिन्होंने ‘सुखमय जीवन’ लिखा है। मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आपके दर्शन हुए। मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी है और चाचाजी तो उसकी प्रशंसा किए एक दिन नहीं जाने देते। वे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न होंगे।’

स्त्री के सामने उसके नैहर की बड़ाई कर दें और लेखक सामने उसके ग्रंथ की। यह प्रिय बनने का अमोघ मंत्र है। जिस साल मैंने बी० ए० पास किया था उस साल कुछ दिन लिखने की धुन उठी थी। ला कालेज के फर्स्ट इयर में सेक्शन और कोड की परवाह न करके एक ‘सुखमय जीवन’ नामक पोथी लिख चुका था। समालोचकों ने आड़े हाथों लिया था और वर्ष भर में सत्रह प्रतियाँ बिकी थीं। आज मेरी कदर हुई कि कोई उसका सराहने वाला तो मिला।

7. इतने में हम लोग बरामदे में पहुँचे, जहाँ पर कनटोप पहने, पंजाबी ढंग की दाढ़ी रखे एक अधेड़ महाशय कुर्सी पर बैठे पुस्तक पढ़ रहे थे। बालिका बोली—

“चाचाजी, आज आपके बाबू जयदेवशरण वर्मा बी० ए० को साथ लाई हूँ। इनकी बाइसिकिल बेकाम हो गई है। अपने प्रिय ग्रंथकार से मिलाने के लिए कमला को धन्यवाद मत दीजिए, दीजिए उनके पंप भूल आने को।”

वृद्ध ने जल्दी ही चश्मा उतारा और दोनों हाथ बढ़ाकर मुझसे मिलाने के लिए पैर बढ़ाए।

“कमला, जरा अपनी माता को तो बुला ला। आइए बाबू साहब, आइए। मुझे आपसे मिलने की बड़ी उत्कंठा थी। मैं गुलाबराय वर्मा हूँ। पहले कमसेरियट में हैड क्लर्क था। अब पेंशन लेकर इस एकांत स्थान में रहता हूँ। दो गौ रखता हूँ और कमला तथा उसके भाई प्रबोध को पढ़ाता हूँ। मैं ब्रह्मसमाजी हूँ, मेरे यहाँ परदा नहीं है। कमला ने हिंदी मिडिल पास कर लिया है।”

8. इतना परिचय दे चुकने पर वृद्ध ने श्वास लिया। मुझे भी इतना ज्ञान हुआ कि कमला के पिता मेरी जाति के ही हैं। जो कुछ उन्होंने कहा था, उसकी ओर मेरे कान नहीं थे—मेरे कान उधर थे, जिधर से माता को लेकर कमला आ रही थी।

“आपका ग्रंथ बहुत ही अपूर्व है। दांपत्य सुख चाहने वालों के लिए लाख रुपयों से भी अनमोल है। धन्य है आपको। पहले कमला की माँ और मेरी कभी-कभी खटपट हो जाया करती थी। पर जब से मैं रोज भोजन के पीछे उसे आधे घंटे तक आपकी पुस्तक का पाठ सुनाने लगा हूँ, तब से हमारा जीवन हिंडोले की तरह झूलते-झूलते बीतता है।”

9. “आपको गृहस्थ-जीवन का कितना अनुभव है! आप सब कुछ जानते हैं। भला इतना ज्ञान कभी पुस्तकों से मिलता है? कमला की माँ कहा करती थी कि आप केवल किताबों के कीड़े हैं, सुनी-सुनाई बातें लिख रहे हैं। मैं बार-बार यह कहता था कि इस पुस्तक के लिखने वाले को परिवार का खूब अनुभव है।”

10. मेरे मन में आया कि कह दूँ कि अभी मेरा पच्चीसवाँ वर्ष चल रहा है, कहाँ का अनुभव और कहाँ का परिवार ? फिर सोचा कि ऐसा कहने से ही मैं वृद्ध महाशय की निगाहों से उतर जाऊँगा और कमला की माँ सच्ची हो जाएगी कि बिना अनुभव के छोकरे ने गृहस्थ के कर्तव्य-कर्मों पर पुस्तक लिख मारी है। यह सोचकर मैं मुसकरा दिया

(3)

11. वृद्ध ने उस दिन मुझे जाने नहीं दिया। कमला की माता ने प्रीति के साथ भोजन कराया और कमला ने पान लाकर दिया। चाचाजी की बातों से मालूम पड़ा कि अभी कमला का विवाह नहीं हुआ है, उसे अपनी फलों की क्यारी को संहालने का बड़ा प्रेम है, वह 'सखी' के नाम से 'महिला मनोहर' मासिक पत्रिका में लेख भी दिया करती है।

सायंकाल को मैं बगीचे में टहलने निकला। देखता क्या हूँ कि एक कोने में केले के झाड़ों के नीचे मोतिये और रजनीगंधा की क्यारियाँ हैं और कमला उनमें पानी दे रही है। मैंने सोचा कि यही समय है। आज मरना है या जीना है। उसको देखते ही मेरे हृदय में प्रेम की अग्नि जल उठी थी। मैंने दौड़कर कमला का हाथ पकड़ लिया। उसके चेहरे पर सुखी दौड़ गई और डोलची उसके हाथ से गिर पड़ी। मैं उसके कान में कहने लगा—

“आपसे एक बात कहनी है”

“क्या ? यहाँ कहने की कौन-सी बात है ?”

“जब से आपको देखा है तब से.....।”

“बस चुप करो। ऐसी धृष्टता!”

12. मैं स्वयं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ, पर लगा बकने—“प्यारी कमला, तुम मुझे प्राणों से बढ़कर हो, मेरा जीवन तुम्हारे बिना मरुस्थल है, उसमें मंदाकिनी बनकर बहो। जबसे तुम्हें देखा है, मेरा मन मेरे अधीन नहीं है। मैं तब तक शांति न पाऊँगा जब तक तुम.....।”

कमला जोर से चीख उठी और बोली—“आपको ऐसी बातें कहते लज्जा नहीं आती? धिक्कार है आपकी शिक्षा को और धिक्कार है आपकी विद्या को! इसी को आपने सभ्यता मान रखा है कि अपरिचित कुँआरी से एकांत ढूँढकर ऐसा घृणित प्रस्ताव करें। ‘सुखमय जीवन’ का लेखक ऐसा घृणित चरित्र। अभी चाचाजी को बुलाती हूँ।”

मैं सुनता जा रहा था। क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ? वह अग्नि-वर्षा मेरे किस अपराध पर? तो भी मैंने हाथ नहीं छोड़ा। कहने लगा, “सुनो कमला, यदि तुम्हारी कृपा हो जाए, तो सुखमय जीवन.....।”

13 “देखा तेरा सुखमय जीवन! पापात्मा!! मैंने साहित्य-सेवी जानकर और ऐसे उच्च विचारों का लेखक समझकर तुझे अपने घर में घुसने दिया और तेरा विश्वास और सत्कार किया था। मैंने तेरी सारी बातें सुन ली हैं।” चाचाजी आकर क्रोध से काँपते हुए कहने लगे “शैतान, तुझे यहाँ आकर माया-जाल फैलाने का स्थान मिला। ओफ! मैं तेरी पुस्तक से छला गया।”

उनका धारा प्रवाह बंद ही नहीं होता था। मैंने भी गुस्से में आकर कहा, “बाबू साहब, जबान संभालकर बोलिए। आपने अपनी कन्या को शिक्षा दी है और सभ्यता सिखाई है, मैंने भी शिक्षा पाई है और सभ्यता सीखी है। आप धर्म-सुधारक हैं। यदि मैं उसके गुण और रूप पर आसक्त हो गया, तो अपना पवित्र प्रणय उसे क्यों न बताऊँ? पुराने ढर्रे के पिता दुराग्रही होते सुने गए हैं। आपने क्यों सुधार का नाम लजाया है?”

“तुम सुधार का नाम मत लो। तुम तो पापी हो। ‘सुखमय जीवन’ के कर्ता होकर.....।”

“भाड़ में जाए ‘सुखमय जीवन’। उसी के मारे नाकों में दम है!! ‘सुखमय जीवन’ के कर्ता ने क्या यह शपथ खा ली है कि जन्म-भर कुँआरा ही रहे? क्या उसमें प्रेम-भाव नहीं हो सकता? क्या उसमें हृदय नहीं होता?”

“हैं, जन्म भर कुँआरा?”

“हैं, काहे की? मैं तो आपकी पुत्री से निवेदन कर रहा था कि जैसे उसने मेरा हृदय हर लिया है वैसे यदि आपना हाथ मुझे दे, तो उसके साथ ‘सुखमय जीवन’ के उन आदर्शों को प्रत्यक्ष अनुभव करूँ, जो अभी तक मेरी कल्पना में हैं। पीछे हम दोनों आपकी आज्ञा माँगने आते।”

“तो आपका विवाह नहीं हुआ? आपकी पुस्तक से जान पड़ता है कि आप कई वर्षों के गृहस्थ-जीवन का अनुभव रखते हैं। तो कमला की माता ही सच्ची थी।”

14. इतनी बातें हुई थीं, पर न मालूम क्यों मैंने कमला का हाथ नहीं छोड़ा। कमला ने लज्जा से आँखें नीची कर ली। मैंने कमला के दोनों हाथ खींचकर अपने हाथों में ले लिए और उसने उन्हें हटाया नहीं इस तरह चारों हाथ जोड़कर वृद्ध से कहा—

“चाचाजी, उस निकम्मी पोथी का नाम मत लीजिए। बेशक, कमला की माँ सच्ची है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक पहचान सकती हैं कि कौन अनुभव की बातें कर रहा है और कौन गप्पें हाँक रहा है। आपकी आज्ञा हो, तो कमला और मैं दोनों सच्चे सुखमय जीवन का आरंभ करें।”

वृद्ध ने जेब से रूमाल निकालकर चश्मा पोंछा और अपनी आँखें पोंछी। आँखों पर कमला की माता की विजय होने के क्षोभ के आँसू थे, या घर बैठे पुत्री को योग्य पात्र मिलने के हर्ष के आँसू, राम जाने।

उन्होंने मुस्कराकर कमला से कहा, “दोनों मेरे पीछे-पीछे चले आओ। कमला! तेरी माँ सच कहती थी।” वृद्ध बँगले की ओर चलने लगे। उनकी पीठ फिरते ही कमला ने आँखें मूँदकर मेरे कंधे पर सिर रख दिया।

4.0 പുതിയ പദങ്ങൾ
ഖണ്ഡിക — 1

ഫല	പരീക്ഷാഫലം	താര കാ ചപരാസീ	കമ്പിശിപായി
ദിന	വളരെ ബുദ്ധിമുട്ടി	हाथ-पाँव काँपना	പേടിച്ചുവിറക്കുക
ബുരി	വളരെ ബുദ്ധിമുട്ടി	परीक्षक	പരീക്ഷകൻ
तरह	യാണു ദിവസങ്ങൾ	नहीं सहा गया	സഹിക്കാനായില്ല
बीतते हैं	കഴിയുന്നത	छाती	നെഞ്ച്
ചപരാസീ	പ്യൂൺ	पर्चे	ഉത്തരക്കടലാസുകൾ
चैन	ആശ്വാസം	जी बहलाना	സന്തോഷപിത്തമാകുക.
पैर की आहट	കാലൊച്ച	लोहे का घोड़ा	സൈക്കിൾ
कलेजा मुँह	വളരെ പരിഭ്രമം		
को आना	തോന്നുക		

ഖണ്ഡിക —2

दाना	ധാന്യം
दम	കരുത്ത്
पीछे लग जाना	പിന്തുടരുക
मलाई की बरफी	ഒരു തരം ഐസ്ക്രീം
गजब की चीज़	ആശ്ചര്യകരമായ വസ്തു
सनकी	കിറുക്കൻ
हवा कर देना	കാറ്റുവേഗത്തിൽ
सिर खाली करना	ചിന്താവിമുക്തനാവുക

ഖണ്ഡിക —3

फूँक निकल गई	(സൈക്കിളിന്റെ)
	കാറ്റുപോയി
काँटों की बाढ़	മുള്ളു വേലി
गालियाँ देना	ചീത്തപറയുക
सुधरना	നന്നാകുക
निस्तार	രക്ഷ
मील का पत्थर	മൈൽക്കുറ്റി
बेदम हो लिया	തളരുക, ശ്വാസം
	നിലച്ചുപോവുക

ഖണ്ഡിക —4

चश्मा	കണ്ണട
रेत की तह	പൊടിപടലം

जमी हुई	കട്ടിപിടിച്ച
पसीना	വിയർപ്പ്
लंबी सड़क (സ്ത്രീ)നീണ്ടവഴി	
एँठ दिखाना	അഹങ്കരിക്കുക
ललाट	നെറ്റിത്തടം
पसीने की बूँदें	} വിയർപ്പുതുള്ളികൾ
टपकना	
	ഇറ്റിറ്റുവീഴുക
चिढ़	അസ്വസ്ഥത
इस सूरत में	ഇക്കണക്കിന്
मेरा जी जानता था	എനിക്കറിയാമാ
	യിരുന്നു

ഖണ്ഡിക —5

छीन लेना	തട്ടിപ്പറിക്കുക
सुधारना	നന്നാക്കുക
कंटीला	മുള്ളുള്ള
पोंछना	തുടയ്ക്കുക
चिकना	മിനുസമുള്ള
दमकना	ശോഭിക്കുക
घिरा	വളഞ്ഞുചുറ്റിയ
प्रेम बुद्धि	സ്നേഹബുദ്ധി

ഖണ്ഡിക —6

के दर्शन होना	കാണുക
नैहर	അമ്മയുടെവീട്
बड़ाई	പ്രശംസ, പ്രശംസ
आड़े हाथों लेना	രൂക്ഷമായി വിമർശിക്കുക
समालोचक	നിരൂപകൻ
प्रति	പകർപ്പ്
अमोघ मंत्र	ലക്ഷ്യംതെറ്റാത്ത മന്ത്രം
धुन उठना	താല്പര്യം തോന്നുക
पोथी (സ്ത്രീ)	ഗ്രന്ഥം
कदर	ആദരവ്
सराहनेवाला	പ്രശംസിക്കുന്നവൻ

ഖണ്ഡിക —7

बरामदा	വരാന്ത
कनटोप	ചെവിമൂടുന്ന തൊപ്പി
दाढ़ी	താടി
अधेड़	മദ്ധ്യവയസ്കൻ
बेकाम होना	കേടാവുക

ग्रंथकार

ഗ്രന്ഥകർത്താവ്

हाथ बढ़ाना	കൈനീട്ടുക
पैर बढ़ाना	മുന്നോട്ടുപോവുക
गौ	गाय
रसद	ഭണ്ഡാരം
सेना का रसद विभाग	സറ്റോർ ഡിവിഷൻ

ഖണ്ഡിക —8

अनमोल	അമൂല്യമായ, अपूर्व
दांपत्य सुख	ദാമ്പത്യസുഖം
धन्य है आपको	താങ്കൾക്കു സ്തുതി
खटपट हो जाना	കലഹിക്കുക
हिंडोले की तरह	ഊഞ്ഞാൽ പോലെ
झूलना	ആടുക
कूड़ा-करकट	ചപ്പുംചവറും

ഖണ്ഡിക —9

गृहस्थ जीवन	കുടുംബജീവിതം
किताब का कीड़ा	പുസ്തകപ്പുഴു
सहधर्मिणी	ഭാര്യ

ഖണ്ഡിക —10

छोकरा	ചെറുക്കൻ
-------	----------

डोलची	ചെറിയ കുട്ട
धृष्टता	ഹുക്, അഹങ്കാരം

ഖണ്ഡിക — 11

प्रीति (സ്ത്രീ)	സ്നേഹം
धधकना	ആളിക്കത്തുക
फूलों की ब्यारी	പൂത്തോട്ടം
संहालना	സംരക്ഷിക്കുക

मासिक पत्र	മാസിക
लेख	ലേഖനം

केले के झाड़	വാഴത്തോട്ടം
मोतिया	ഒരുതരം മുല്ല
रजनी गंधा	നിശാഗന്ധി
पहर	} യാമം (3 മണിക്കൂർ)
दो ही पहर में	
चेहरे पर सुखी	മുഖം ചുവന്നു
दौड़ गई	

ഖണ്ഡിക — 12

वचन-प्रवाह	വാഗ്ധാര
मरुस्थल	മരുഭൂമി
मंदाकिनी	ഗംഗാനദി

मेरा मन मेरे अधीन नहीं है	} എന്റെ മനസ്സ് എന്റെ പിടിയിലല്ല
चीखना	

अग्नि-वर्षा	പൊള്ളുന്ന വാക്കുകൾ
-------------	--------------------

बकना	പുലമ്പുക
प्राणों से बढ़कर	ജീവനേക്കാളധികം

भ्रमर	വണ്ട്
-------	-------

आपकी शिक्षा पर धिक्कार है	} വിദ്യാഭ്യാസവന്നതാ ണെന്നതിൽ ലജ്ജിക്കുക

अमृत की पट्टी	അമൃതലേപനം
---------------	-----------

कुँआरी	കന്യക
--------	-------

घृणित प्रस्ताव	വെറുക്കത്തക്കതായ പ്രസ്താവന
----------------	-------------------------------

ഖണ്ഡിക — 13

छला जाना	വഞ്ചിക്കപ്പെടുക
----------	-----------------

साहित्य-सेवी	സാഹിത്യകാരൻ
--------------	-------------

रूप	സൗന്ദര്യം
-----	-----------

सत्कार	ആതിഥ്യം
--------	---------

अपना हाथ देना	വിവാഹത്തിനു സമ്മതിക്കുക
---------------	----------------------------

निवेदन करना	അഭ്യർത്ഥിക്കുക
-------------	----------------

ധാരാ-പ്രവാഹ അനർഗളമായ ഒഴുക്ക് ഖണ്ഡിക — 14

धर्म सुधारक	മതപരിഷ്കർത്താവ്	निकम्मा	ഉപയോഗമില്ലാത്ത
नाकों दम होना	ബുദ്ധിമുട്ടുക	गप्पें हाँकना	വെടിപറയുക
हर लेना	അപഹരിക്കുക	बेशक	നിസംശയം
भाड़ में जाए	നശിക്കട്ടെ	क्षोभ	ക്ഷോഭം
शपथ खाना	പ്രതിജ്ഞയെടുക്കുക		

5.0 കഥാ സംഗ്രഹം

ചുവടെ കഥയുടെ സംഗ്രഹം കൊടുത്തിരിക്കുന്നു. നിങ്ങൾ കഥയുടെ സംഗ്രഹം സ്വയം എഴുതാൻ ശ്രമിക്കുക

जयदेव शरण वर्मा एल०एल०बी० की परीक्षा दे चुके थे। अभी परीक्षाफल नहीं आया था। वे परीक्षाफल का इंतजार कर रहे थे। एक दिन चिंता दूर करने के लिए वे साइकिल पर निकल पड़े। रास्ते में साइकिल पंचर हो गई। बेचारे किसी तरह साइकिल को खींचते हुए जा रहे थे। उनकी हालत देखकर एक लड़की को उन पर दया आ गई। वह उन्हें अपने घर ले गई। वहाँ उसे पता लगा कि ये सज्जन 'सुखमय जीवन' नामक प्रसिद्ध पुस्तक के लेखक हैं। लेखक को भी पता चला कि उसकी पुस्तक को कमला के घर में सभी लोग पहले ही पढ़ चुके थे और उस के चाचा श्री गुलाबराय वर्मा तथा माता बहुत प्रभावित थे।

चाचा जी (पिता) का कहना था कि सुखमय जीवन के लेखक ने सब बातें अनुभव से लिखी हैं और माता का कहना था कि लेखक ने वे बातें अनुभव से नहीं, किताबी ज्ञान से लिखी हैं। किंतु वास्तव में यह थी, कि जयदेवशरण का विवाह हुआ ही नहीं था।

लड़की को देखते ही जयदेवशरण उसके रूप पर मोहित हो गए थे। शाम के समय लड़की को एकांत में पाकर जयदेवशरण ने उसके सामने प्यार प्रकट किया। लड़की को यह बात बुरी लगी कि एक विवाहित और अपरिचित व्यक्ति उससे प्यार की बात करे। लड़की के पिता भी जयदेव की बातें सुनकर वहाँ आ गए। उन्होंने उसे बुरा भला कहा। अंत में जयदेव शरण ने असली बात बताई कि वह अभी कुँआरा ही है। यह बात सुनकर सभी बहुत खुश हुए और कन्या के माता-पिता ने इस विवाह के लिए अपनी सहमति दे दी।

6.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

ജയശങ്കർ പ്രസാദ് ആദ്യകാലത്ത് എഴുതിയിട്ടുള്ള ഒരു കഥയാണ് ഞാൻ ഞാൻ ജാദൂഗർ അദ്ദേഹം കവിയും നാടകകൃത്തുമെന്ന നിലയിൽ മാത്രമല്ല. നോവലിസ്റ്റ് കഥാകൃത്ത് എന്നീ നിലകളിലും പ്രസിദ്ധനാണ്.

രോഗിണിയായ തന്റെ മാതാവിനെ സംരക്ഷിക്കാൻ തെരുവീഥികളിൽ ജാലവിദ്യകൾ പ്രദർശിപ്പിച്ച് ഉപജീവനം നയിക്കുന്ന ഒരു പതിമൂന്നുകാരന്റെ കഥയാണിത്. ദരിദ്രനായ ബാലൻ പ്രസന്നവദനനും സാഹസപ്രിയനുമായ ഒരു കൊച്ചു ജാലവിദ്യക്കാരനായി ഈ കഥയിലുടനീളം ചിത്രീകരിക്കപ്പെട്ടിരിക്കുന്നു. ഈ കൊച്ചു ജാലവിദ്യക്കാരന്റെ ബാഹ്യരൂപത്തിലും പ്രവർത്തനങ്ങളിലും പ്രകടമാകാത്ത ആന്തരിക വേദനയെ ഹൃദയസ്पर्ശിയായി കഥാകൃത്ത് ചിത്രീകരിച്ചിരിക്കുന്നു.

7.0 പാഠം

छोटा जादूगर

(जयशंकर प्रसाद)

1. कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। मैंने पूछा—“क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?”

“मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ—उसने बड़े जोश से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।”

मैंने पूछा—“और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?”

“नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।”

मैंने कहा—“तो चलो मैं वहाँ पर तुमको ले चलूँ।” मैंने मन-ही-मन कहा—भाई! आज के तुम्हीं मित्र रहे।

उसने कहा—“वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।”

मैंने उससे सहमत होकर कहा—“तो फिर चलो पहले शरबत पी लिया जाए।” उसने हाँ कहकर सिर हिला दिया।

2. मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा—“तुम्हारे और कौन हैं?”

“माँ और बाबूजी”

“उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?”

“बाबूजी जेल में हैं।”

“क्यों?”

“देश के लिए।”— वह गर्व से बोला।

“और तुम्हारी माँ?”

“वह बीमार हैं।”

“और तुम यहाँ तमाशा देख रहे हो?”

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा—“तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।”

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

“हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी! माँ जी बीमार हैं, इसलिए मैं नहीं गया।”

“कहाँ?”

“जेल में! जब कुछ लोग तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न तमाशा दिखाकर माँ की दवा दारूँ और अपना पेट भरूँ।”

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा—“अच्छा चलो निशाना लगाया जाए।”

3. हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बाहर टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिए गए।

लड़के ने कहा—“बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।” वह नौ-दो ग्यारह हो गया। मैंने मन-ही-मन कहा—“इतनी जल्दी आँख बदल गई।”

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा—“बाबूजी!”

“मैंने पूछा-कौन?”

“मैं छोटा जादूगर।”

4. कोलकाता के सुंदर बोटानिकल-उद्यान में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जल-पान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने का खादी का झोला, साफ़ जाँघिया और आधी बाहों का कुरता। सिर पर मैला रूमाल सूत की रस्सी से बँधा हुआ था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा—

“बाबूजी नमस्ते! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ।”

“नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।”

“फिर इसके बाद गाना-बजाना होगा बाबूजी?”

“नहीं जी-तुमको.....” मैं क्रोध से कुछ और कहने जा रहा था। श्रीमती ने कहा—
“दिखलाओ जी तुम अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।” मैं चुप हो गया, क्योंकि
श्रीमती जी की बोली में वह माँ की-सी मिठास थी, लड़के को खेल दिखाने से रोका नहीं
जा सकता था। उसने खेल आरंभ किया।

उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके खेलने में अपना अभिनय करने लगे।
भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा।

गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड़डा-वर काना निकला। लड़के की बातों से ही खेल हो
रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक की ज़रूरतों ने कितना चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

5. ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी
टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने से नाच रहे थे। मैंने कहा—“अब हो चुका।
अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।”

श्रीमतीजी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा।

मैंने कहा—“लड़के!”

“छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।”

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमतीजी ने कहा—“अच्छा तुम इस रुपए से क्या
करोगे?”

“पहले भर-पेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कंबल लूँगा।” मेरा क्रोध अब
लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा-ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं।
उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था।

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले।

6. उस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। डूबते हुए सूर्य की अंतिम किरण पेड़ों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। चारों ओर सुन-सान था हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा—“तुम यहाँ कहाँ?”

“मेरी माँ यहीं है, न। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।” मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिमटते हुए कहा—“माँ।”

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

7. बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने आफिस में समय से पहुँचना था। कोलकाता से मन ऊब गया था। फिर भी चलते-चलते एक बार उस बाग को देखने की इच्छा हुई। साथ-ही-साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी अच्छा होता। मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर वह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता, नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानों उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा, वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया! मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा—“आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?”

8. “माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी घड़ी समीप है।” अविचल भाव से उसने कहा।

“तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए।” मैंने क्रोध से कहा।

उसने कहा—“क्यों न आता!”

और कुछ अधिक कहने में जैसे अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षण-भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा—“जल्दी चलो।” मोटर वाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनट में मैं झोंपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में “माँ-माँ” पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से, बे.....निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर पड़े। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं भौंचक्का खड़ा था।

8.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

ഖണ്ഡിക — 1

छोटा जादूगर	കൊച്ചുജാലവിദ്യ ക്കാരൻ	निशाना लगाना	ഉന്നം വയ്ക്കുക
		छेदना	മുറിക്കുക
कार्निवाल	കലാപ്രദർശനങ്ങൾ	जोश	ഉത്സാഹം
बिजली	വൈദ്യുതി	रुकावट	തടസ്സം
चूड़ी	വളയം	ले चलना	കൊണ്ടുപോകുക
फुहारा	ഫൗണ്ടൻ, ജലധാര	मैंने मन ही मन कहा	ഞാൻ മനസ്സിൽ പറഞ്ഞു
जगमगाना	തിളങ്ങുക	सहमत होना	യോജിക്കുക
कलनाद गूँजना	മധുരസ്വരം മുഴങ്ങുക	हाँ के बहाने	ശരിയാണെന്നു സമ്മതിക്കുവാൻ
फटा	കീറിയ	पर्दा	കർട്ടൻ
सूत की रस्सी	നൂൽക്കയറ്	सिर हिलाना	തല കുലുക്കുക
ताश के पत्ते	ചീട്ട്		
चूड़ी फेंकना	വളയം എറിയൽ		

ഖണ്ഡിക —2

भीड़ (സ്ത്രീ)	ആശ്ചര്യം
जाड़े की संध्या	ശീതകാലത്തെ സന്ധ്യ
राह	വഴി
मना करना	തടയുക
तिरस्कार	നിന്ദ
हँसी फूट पड़ना	ചിരിച്ചു പോവുക
पथ्य	പഥ്യം
पेट भरना	വിശപ്പടക്കുക
दीर्घ निःश्वास लेना	ദീർഘ നിശ്വാസം വിടുക
दवा करना	ചികിത്സിക്കുക
तमाशा दिखाना	നേരമ്പോക്ക് കാണിക്കുക
व्यग्र होना	വെപ്രാളം തോന്നുക

ഖണ്ഡിക —3

पक्का निशानेबाज	ലക്ഷ്യം പിഴയ്ക്കാത്തവൻ
दंग रह जाना	അത്ഭുതപ്പെടുക
बटोरना	ശേഖരിക്കുക
नौ दो ग्यारह होना	പമ്പകടക്കുക

आँख बदलना പ്രകൃതം മാറുക

पान की दूकान മുറുക്കാൻ കട

कोई गेंद खाली } ഒരു പന്തും
न गई } പാഴായില്ല

झूला ഊഞ്ഞാൽ

अकस्मात യാദ്യശ്ചികമായി

ഖണ്ഡിക —4

उद्यान ഉദ്യാനം

घना ഇടതൂർന്ന

मंडली (സ്ത്രീ) സമൂഹം

जलपान करना ലഘുഭക്ഷണം കഴിക്കുക

चारखाने का } നാല് അറക
खादी का झोला } ഭോടുകൂടിയ
} വദർസഞ്ചി

जाँघिया അണ്ടർവെയർ

आधी बाँहों का कुरता അരക്കയ്ക്ക് ഷർട്ട്

मस्तानी चाल से ഉന്മത്തതയോടുള്ള നടത്തം

झूमता हुआ ഇളകി ആടിക്കൊണ്ട്

मिठास മാധുര്യം

भालू കരടി

മനാനാ	പിണക്കം മാറ്റുക
രൂഠനാ	പിണങ്ങുക
घुड़कना	ശകാരിക്കുക
गुड़िया का ब्याह	പാവക്കല്യാണം
गुड़डा वर	പാവവരൻ
हँसी में लोट-पोट	ചിരിച്ചു മണ്ണു കപ്പുക

ഖണ്ഡിക —5

जुड़ जाना	യോജിക്കുക
अब हो चुका	മതിയായി
लट्टू अपने से	പമ്പരം സ്വയം
नाचना	നൃത്തം ചെയ്യുക
खेल बटोरना	കളി അവസാനിപ്പിക്കുക
वह उछल उठा	അവൻ തുള്ളിച്ചാടി
जीविका	ജീവിതമാർഗ്ഗം
भर-पेट	വയർ നിറയെ

पकौड़ी (സ്ത്രീ)	പക്കാവട
सूती कंबल	കമ്പിളി
ईर्ष्या (സ്ത്രീ)	അസൂയ
लता कुंज	വള്ളിക്കുടിൽ

ഖണ്ഡിക —6

बनावटी	കൃത്രിമമായ
रह-रह कर	ഇടയ്ക്കിടെ
चिथड़ा	പഴം തുണി

संध्या साँय-साँय	} സന്ധ്യയുടെ ഇരുട്ടുപടർന്നു തുടങ്ങി
करने लगी	
डूबता हुआ सूरज	അസ്തമയ സൂര്യൻ
विदाई लेना	യാത്ര പറയുക
सुनसान	ഏകാന്തമായ
चिमटना	ഒട്ടിച്ചേരുക, ചിപटना

ഖണ്ഡിക —7

औरों को	അന്യർക്ക്
चेष्टा करना	യത്നിക്കുക
मन ऊब जाना	മനസ്സ് മുഷിയുക
रंगमंच	സേറുജ്
सजा होना	അലങ്കരിക്കുക
प्रसन्नता	ആനന്ദം
स्फूर्तिमान	ഉന്മേഷമുള്ളവൻ
पीठ थपथपाना	പുറത്തു തലോടുക

ഖണ്ഡിക —8

मेरी घड़ी समीप है	എന്റെ സമയമടുത്തു
अविचल भाव से	ഒരുകുലുക്കവുമില്ലാതെ
साधन	ഉപകരണം
भूल	തെറ്റ്
लिपटना	കെട്ടിപ്പിടിക്കുക
माप	മാനദണ്ഡം
फेंकना	എറിയുക

9.0 സംഗ്രഹം

9.1 സരളമായ ഹിന്ദിയിൽ കഥയുടെ ചുരുക്കം കൊടുത്തിരിക്കുന്നു. വായിച്ചശേഷം സ്വന്തം വാക്യത്തിലെഴുതുക.

एक दिन लेखक को कोलकाता के कार्निवाल मैदान में तेरह-चौदह साल का एक लड़का मिला। वह रस्सी और ताश का खेल दिखाकर लोगों का मनोरंजन करता था। लेखक उस लड़के से बातें करने लगे तो उसने बताया कि मेरे पिता देश के लिए जेल गए हैं और माँ बीमार हैं। वह लोगों को अपने खेल दिखाकर कुछ पैसे इकट्ठे करके माँ की देखभाल करता था। लेखक ने उसे शरबत पिलाया। लड़के ने अपना नाम 'छोटा जादूगर' बताया।

कुछ दिन बाद लेखक तथा उसकी पत्नी बोटानिकल उद्यान घूमने गए। वहाँ छोटा जादूगर भी आया हुआ था। उसने उनके पास आकर अपना खेल दिखाया। लेखक की पत्नी ने उसे एक रुपया दिया जिससे उसने एक कंबल खरीदा। वहाँ से लौटते समय रास्ते में उन्हें फिर छोटा जादूगर मिला। वे उसके साथ उसकी झोंपड़ी में भी गए जहाँ उसकी बीमार माँ चिथड़े में ढकी पड़ी थी। लड़के ने उसे कंबल ओढ़ा दिया।

कुछ समय बाद लेखक को वह छोटा जादूगर फिर मिला। वह सड़क के किनारे लोगों को अपने खेल दिखा रहा था। इस बार वह पहले की तरह प्रसन्न नहीं था। लेखक ने उसकी उदासी का कारण पूछा। लड़के ने बतलाया कि उसकी माँ ने कहा था कि मेरा अंतिम समय निकट आ गया है, इसलिए जल्दी लौट आना। यह सुनकर लेखक को दया आई और वह छोटे जादूगर को अपनी गाड़ी में बिठाकर उसकी झोंपड़ी में ले गया। जैसे ही वे दोनों अंदर घुसे उन्होंने देखा कि उसकी माँ के मुँह में 'बेटा' शब्द निकला और वह मर गई।

— 0 —

ഉള്ളടക്കം

1.0 പാഠഭാഗത്തെക്കുറിച്ച്

യൂണിറ്റ് —1

2.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

3.0 പാഠം —नमक का दारोगा—പ്രേമചന്ദ

4.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

5.0 സംഗ്രഹം

6.0 ചോദ്യോത്തരങ്ങൾ

യൂണിറ്റ് —2

7.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

8.0 പാഠം —ताई-विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

9.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

10.0 സംഗ്രഹം

11.0 ചോദ്യോത്തരങ്ങൾ

1.0 പാഠഭാഗത്തെക്കുറിച്ച്

മുൻ പാഠത്തിലേതുപോലെ ഈ പാഠത്തിലും രണ്ടും കഥകൾ ഉൾപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നു. ഒന്നാമത്തെ കഥ ഹിന്ദിയിലെ പ്രസിദ്ധ കഥാകൃത്തായ പ്രേംചന്ദ് രചിച്ചിട്ടുള്ളതാണ്. ഈ കഥയിൽ നാട്ടിൽ നടമാടുന്ന അഴിമതിയും കൈക്കൂലിയും ചിത്രീകരിക്കുന്നതോടൊപ്പം അപൂർവ്വം ചില സത്യസന്ധമായ ഓഫീസർമാരുടെ സ്വഭാവമേന്മയും വ്യക്തമാക്കുന്നു.

രണ്ടാമത്തെ കഥയായ 'ताई' യുടെ രചയിതാവ് വിശ്വംഭർനാഥ് ശർമ്മ കൗശിക് ആണ്. ഈ കഥയിൽ വാത്സല്യത്തിന്റെയും വെറുപ്പിന്റെയും സംഘർഷത്തിൽപ്പെട്ടിരുന്ന വല്യമ്മ (അച്ഛന്റെ ജേഷ്ഠന്റെ ഭാര്യ) രാമേശ്വരിയുടെ മാനസികനില പ്രകടമാക്കിയിരിക്കുന്നു. സന്താനഭാഗ്യം ഇല്ലാത്ത രാമേശ്വരിക്ക് ഭർത്താവ് സഹോദരപുത്രനായ മനോഹരനെ സ്നേഹിക്കണമെന്നുണ്ട്. സന്താനരഹിതയായതിനാൽ അവനെ വെറുക്കുവാനേ കഴിയുന്നുള്ളൂ. ഈ കഥയിൽ അവരുടെ മാനസിക സംഘർഷം ചിത്രീകരിച്ചിരിക്കുന്നു.

യൂണിറ്റ് — 1

2.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

ആദർശവാദവും നാട്ടുനടപ്പും തമ്മിലുള്ള സംഘട്ടനമാണ് नमक का दारोणा എന്ന കഥയിലെ പ്രതിപാദ്യം. ആക്കാലത്ത് ഉപ്പിന്റെ നിയന്ത്രണത്തിന് ഏർപ്പെടുത്തിയിരുന്ന ഇൻസ്പെക്ടർമാർ അധികാരം ദുർവ്വിനിയോഗം ചെയ്ത് പണം സമ്പാദിച്ചിരുന്നു. പണം വാരിക്കൂട്ടാമെന്നുള്ളതുകൊണ്ട് ഇൻസ്പെക്ടർ ജോലി വളരെ ആകർഷകമായിരുന്നു. ഈ കഥയിലെ കഥാപാത്രങ്ങൾ സജീവവും സംഭവങ്ങൾ യാഥാർത്ഥ്യബോധം ഉളവാക്കുന്നതുമാണ്. മുൻഷി വംശീയർ ഉപ്പ് വിഭാഗത്തിന്റെ ഇൻസ്പെക്ടറായി നിയമിതനായി. വംശീയന്റെ പിതാവ് മകനു ധാരാളം പണം സമ്പാദിക്കുവാനുള്ള അവസരം ലഭിച്ചതിൽ സന്തോഷിച്ചു. എന്നാൽ സ്വാർത്ഥലാഭത്തേക്കാളും

കർത്തവ്യ നിർവ്വഹണത്തിനു പ്രധാന്യം കല്പിച്ച ആദർശധീരനായ ഒരു ഓഫീസർ ആയിരുന്നു വംശീധർ. ഒരിക്കൽ അദ്ദേഹം ഡ്യൂട്ടിയിലായിരുന്നപ്പോൾ അർദ്ധ രാത്രിയിൽ കുറേ കാളവണ്ടികൾ നിറയെ ഉപ്പുചാക്കുകളുമായി പാലം കടന്നുവന്നുനടക്കുകയുണ്ടായി. ഉടനെ പുതിയ ഓഫീസറായ വംശീധർ സ്ഥലത്തെത്തി അവരെ തടഞ്ഞു. ഉപ്പിന്റെ ഉടമസ്ഥനായ അലോപീദീൻ ഇൻസ്പെക്ടർ വംശീധരിനു നാല്പതിനായിരം രൂപകൈക്കൂലി കൊടുത്തു രക്ഷപെടാൻ ശ്രമിച്ചു. എന്നാൽ കർത്തവ്യനിഷ്ഠനായ വംശീധർ കൈക്കൂലി സ്വീകരിക്കാതെ അലോപീദീനിനെ അറസ്റ്റു ചെയ്യാൻ ആജ്ഞാപിച്ചു. വ്യാപാര പ്രമുഖനായ അലോപീദീനിനെ അറസ്റ്റു ചെയ്ത് അപമാനിച്ചത് കോടതി വംശീധരിന്റെ കുറ്റമായി വിധിച്ചു. തുടർന്നു വംശീധരിന് ജോലി നഷ്ടപ്പെട്ടു തന്റെ പിതാവിന്റെ അടുക്കൽ എത്തി. ഈ സംഭവത്തിനു ശേഷം ഒരിക്കൽ അലോപീദീൻ ജോലി നഷ്ടപ്പെട്ട വംശീധരിന്റെ അടുത്തെത്തി അദ്ദേഹത്തിന്റെ എല്ലാ സ്വത്തിന്റെയും സ്ഥാപനങ്ങളുടെയും മാനേജരായിരിക്കാൻ അഭ്യർത്ഥിച്ചു. വംശീധരിനു അതു വിശ്വസിക്കുവാൻ കഴിഞ്ഞില്ല. അവസാനം അദ്ദേഹം ആ അഭ്യർത്ഥന സ്വീകരിച്ചു.

അഴിമതിക്കും കൈക്കൂലിയ്ക്കും എതിരെ നീതിബോധത്തിന്റെയും സത്യസന്ധതയുടെയും വിജയം ഈ കഥയിലൂടെ വെളിപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നു.

3.0 പാഠം—आधार पाठ

नमक का दारोगा

प्रेमचंद्र

(1)

1. जब नमक का नया विभाग बना तो अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ। कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। पटवारी गीरी का सर्व-सम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था, जब अंग्रेजी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और शृंगार रस के काव्य पढ़कर फारसीदाँ लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे। मुंशी वंशीधर रोजगार की खोज में निकले। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे—बेटा! घर

की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ। न मालूम कब गिर पड़ूँ। अब तुम्हीं घर के मालिक मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान भत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिखाई देता है और फिर घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी में उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसमें बरकत होती है। तुम स्वयं विद्वान हो तुम्हें क्या बताऊँ? इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो, करो।

2. इस उपदेश के बाद पिताजी ने आशीर्वाद दिया। वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे। ये बातें ध्यान से सुनीं और घर से चल खड़े हुए। अच्छे शकुन से चले थे, जाते ही नमक-विभाग के दारोगा-पद पर प्रतिष्ठित हो गए। वेतन अच्छा और ऊपरी आय का ठिकाना ही न था। वृद्ध मुंशीजी को शुभ संवाद मिला तो फूलें न समाए। महाजन लोग कुछ नरम पड़े, कलवार की आशा-लता लहराई। पड़ोसियों के हृदय में शूल उठने लगे।

(2)

3. जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर को यहाँ आए अभी छह महीनों से अधिक न हुए थे, लेकिन इस थोड़े समय में उन्होंने अपनी कार्यकुशलता और उत्तम आचार से अफसरों को मोहित कर लिया था। अफसर लोग उन पर बहुत विश्वास करने लगे। नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बंद किए मीठी नींद सोते थे। अचानक आँख खुली तो नदी के प्रवाह की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया, उठ बैठे। इतनी रात गए गाड़ियाँ क्यों नदी के पार जाती हैं? अवश्य कुछ-न-कुछ गोलमाल है। तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया। वरदी पहनी, तमचा जेब में रखा और बात की बात में घोड़ा बढ़ाए हुए पुल पर आ पहुँचे। गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल से पार जाते देखी। डाँटकर पूछा—किसकी गाड़ियाँ हैं?

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कानाफूसी हुई, तब आगे वाले ने कहा—
पंडित अलोपीदीन की।

“कौन अलोपीदीन?”

“दातागंज के”

4. मुंशी वंशीधर चौंके। पंडित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित जमींदार थे।
लाखों रुपयों का लेन-देन करते थे।

मुंशीजी ने पूछा, गाड़ियाँ कहाँ जाएँगी? उत्तर मिला, कानपुर। लेकिन इस प्रश्न पर
कि इनमें है क्या, फिर सन्नाटा छा गया। दारोगा साहब का संदेह और भी बढ़ा। कुछ देर
तक उत्तर की वाट देखकर वह जोर से बोले—क्या तुम सब गूँगे हो? हम पूछते हैं, इनमें
क्या लदा है?

जब इस बार भी कोई उत्तर न मिला, तो उन्होंने घोड़े को एक गाड़ी से मिलाकर
बोरे को टटोला। भ्रम दूर हो गया। वह नमक के ढेले थे।

(3)

5. पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार, कुछ सोते, कुछ जागते चले आते
थे। अचानक कई गाड़ीवानों ने घबराए हुए आकर जगाया और बोले—महाराज! दारोगा
ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुलाते हैं।

पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि
संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। लेटे ही लेटे गर्व से बोले,
चलो हम आते हैं। यह कहकर पंडितजी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर
खाए। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले बाबूजी आशीर्वाद! कहिए
हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गईं।

वंशीधर रुखाई से बोले—सरकारी हुक्म!

पं० अलोपीदीन ने हँसकर कहा—हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार
को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी
आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से
जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ
रहा था।

6. वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारों की नई उमंग थी। कड़ककर बोले—हम उन नमकहरामों में नहीं हैं, जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। सबेरे आपका कायदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलूसिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।

पं० अलोपीदीन स्तंभित हो गए। गाड़ीवालों में हलचल मच गई। पंडितजी के जीवन में कदाचित् यह पहला अवसर था कि पंडितजी को ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। बदलूसिंह आगे बढ़ा, किंतु रोब के मारे यह साहस न हुआ कि उनका हाथ पकड़ सके। पंडितजी बहुत दीन भाव से बोले—बाबू साहब! ऐसा न कीजिए, हम मिट जाएँगे। इज्जत धूल में मिल जाएगी। हमारा अपमान करने से आपके क्या हाथ आएगा। हम किसी तरह से बाहर थोड़े ही हैं।

वंशीधर ने कठोर स्वर में कहा—हम ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते।

7. अलोपीदीन ने जिस सहारे को चट्टान समझ रखा था, यह पैरों के नीचे से खिसकता हुआ मालूम हुआ। किंतु अभी तक धन की सांख्यिक शक्ति का पूरा भरोसा था। अपने मुख्तार से बोले—लालाजी, एक हजार के नोट बाबू साहब को भेंट करो, आप इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं।

वंशीधर ने गरम होकर कहा—एक हजार नहीं, एक लाख भी मुझे मार्ग से नहीं हटा सकते।

धर्म की बुद्धिहीन दृढ़ता और देव-दुर्लभ त्याग पर धन बहुत झुंझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछलकर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची। किंतु धर्म अलौकिक वीरता के साथ बहुसंख्यक सेना के सम्मुख पर्वत की भाँति अटल अविचलित खड़ा था।

अलोपीदीन निराश होकर बोले—अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपका अधिकार है।

8. वंशीधर ने अपने जमींदार को ललकारा। बदलूसिंह मन में दारोगाजी को गालियाँ देता हुआ पंडित अलोपीदीन की ओर बढ़ा। पंडितजी घबराकर दो-तीन कदम पीछे हट गए। अत्यंत दीनता से बोले—बाबू साहब, ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए, पच्चीस हजार पर निपटारा करने को तैयार हूँ।

“असंभव बात है।”

“तीस हजार पर?”

“किसी तरह भी संभव नहीं?”

“क्या चालीस हजार पर भी नहीं?”

“चालीस हजार नहीं, चालीस लाख पर भी असंभव है, बदलूसिंह! इस आदमी को अभी हिरासत में ले लो। अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।”

धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला। अलोपीदीन ने एक हृष्ट-पुष्ट मनुष्य को हथकड़ियाँ लिए हुए अपनी तरफ आते देखा। चारों ओर निराशा और कातर दृष्टि से देखने लगे। इसके बाद यकायक मुर्च्छित होकर गिर पड़े।

(4)

9. दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सबेरे ही देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडितजी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थी, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरने वाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफ़र करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ-साहूकार, यह सबके सब देवताओं की भाँति गर्दन चला रहे थे।

जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाए अदालत की तरफ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। भीड़ के मारे छल और छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

10. किंतु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख्तार उनका आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए? ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए? प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र! गवाह थे, किंतु लोभ से डौवाडोल।
11. यहाँ तक कि मुंशीजी को न्याय भी अपनी ओर से कुछ खिंचा हुआ दीख पड़ता था वह न्याय का दरबार था, परंतु उसके कर्मचारियों पर पक्षपात हो, वहाँ न्याय की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मुकदमा शीघ्र समाप्त हो गया। डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अपनी तजबीज़ में लिखा—पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध दिए गए प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं। वह एक बड़े भारी आदमी हैं। यह कल्पना से बाहर है कि उन्होंने थोड़े लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस किया हो। यद्यपि नमक के दारोगा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है, लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उनकी उद्दंडता और अविचार के कारण एक भलेमानुष को कष्ट झेलना पड़ा। हम प्रसन्न हैं कि वह अपने काम में सजग और सचेत रहता है, किंतु नमक के महकमे की बढ़ी हुई नमकहलाली ने उसके विवेक और बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिए।
12. वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। पंडित अलोपीदीन मुस्कराते हुए बाहर निकले। स्वजन बांधवों ने रुपयों की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा, उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले, तो चारों ओर से उनके ऊपर व्यंगबाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक-झुककर सलाम किए। किंतु इस समय एक-एक कटु वाक्य, एक-एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्वलित कर रहा था। कथाचित् इस मुकदमे में सफल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज

उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लंबी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढीले चोगे, एक भी सच्चे आदर के पात्र नहीं हैं।

13. वंशीधर ने धन से वैर-मोल लिया था। उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्य-परायणता का दंड मिला। बेचारे भग्न-हृदय, शोक-खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशीजी तो पहले ही से कुड़बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी। बस, मनमानी करता है। हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन जो काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में हो चाहे अंधेरा, मस्जिद में अवश्य दिया जलाएँगे। खेद है ऐसी समझ पर। पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरवस्था में घर पहुँचे और बूढ़े पिताजी ने यह समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले—जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ। बहुत देर तक पछता-पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से चलें न जाते, तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्ध माता को भी दुख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर-यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गई। पत्नी ने तो कई दिन तक सीधे मुँह बात भी नहीं की।

14. इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। बूढ़े मुंशीजी बैठे राम-राम की माला जप रहे थे। इसी समय उनके द्वार पर सजा हुआ रथ आकर रुका। हरे और गुलाबी परदे, पछहिँ बैलों की जोड़ी, उनकी गर्दनों में नीले धागे, सींगे पीतल से जड़ी हुई। कई नौकर लाठियाँ कंधों पर रखे साथ थे। मुंशीजी अगवानी को दौड़े। देखा तो पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर दंडवत की और लल्लो चप्पो की बातें करने लगे—हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वारा आए। आप हमारे पूज्य देवता हैं। आपको कौन-सा मुँह दिखावें मुँह में तो कालिख लगी हुई है। किंतु क्या करें, लड़का अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्यों मुँह छिपाना पड़ता? ईश्वर निस्संतान चाहे रक्खे, पर ऐसी संतान
- न
- दे।

अलोपीदीन ने कहा—नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिए।

मुंशीजी ने चकित होकर कहा—ऐसी संतान को और क्या कहूँ?

अलोपीदीन ने वात्सल्यपूर्ण स्वर में कहा—कुलतिलक और पुरुखों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं, जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें ?

पं० अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा—दारोगाजी, इसे खुशामद न समझिए, खुशामद करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की जरूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार बल से अपनी हिरासत में ले लिया था, किंतु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूँ। मैंने हजारों रईस और अमीर देखे, हजारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा किंतु मुझे परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बना कर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिए कि आपसे कुछ विनय करूँ।

15. वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा तो उठकर सत्कार किया, किंतु स्वाभिमान सहित। समझ गए कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आए हैं। क्षमा प्रार्थना की चेष्टा नहीं की, वरन् उन्हें अपने पिता की यह ठकुर-सुहाती की बात असह्य-सी प्रतीत हुई। पर पंडितजी की बातें सुनीं तो मन की मैल मिट गई। पंडितजी की ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा। सद्भाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सिर झुका दिया। शर्मते हुए बोले—यह आपकी उदारता है, जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी, वह मेरे सिर माथे पर।

अलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा—नदी के तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं स्वीकार की थी, किंतु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।

वंशीधर बोले—मैं किस योग्य हूँ, किंतु जो कुछ सेवा मुझसे हो सकती है, उसमें त्रुटी न होगी।

अलोपीदीन ने एक स्टॉप लगा हुआ पत्र निकाला और वंशीधर के सामने रखकर बोले—इस पद को स्वीकार कीजिए और अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। मैं ब्राह्मण हूँ, जब तक यह सवाल पूरा न कीजिएगा द्वारा न हटूँगा।

मुंशी वंशीधर ने उस कागज को पढ़ा, तो कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए। पंडित अलोपीदीन ने उन्हें अपनी सारी जायदाद का स्थाई मैनेजर नियत किया था। छह हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने को बंगला, नौकर-चाकर मुफ्त। कंपित स्वर में बोले—पंडितजी मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी इस उदारता की प्रशंसा कर सकूँ। किंतु मैं ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं हूँ।

അലോപിദീന ഹ്സകര ബോലേ—മുझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही जरूरत है।

वंशीधर ने गंभीर भाव से कहा—यों मैं आपका दास हूँ। आप जैसे कीर्तिवान सज्जन पुरुष की सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। किंतु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह अनुभव जो इन त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए बड़े मर्मज्ञ अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले—न मुझे विद्वत की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्यकुशलता की। इन गुणों के महत्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है, जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए, अधिक सोच-विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वहीं नदी के किनारे वाला बेमुरौवत उद्‌दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।

17. वंशीधर की आँखें डबडबा आईं। हृदय के संकुचित पात्र में इतना ऐहसान न समा सका। एक बार फिर पंडितजी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।

अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उन्हें गले लगा लिया।

3.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

മെസ്സാഡിത—1

छल-प्रपंच	കപട മാർഗ്ഗങ്ങൾ
सूत्रपात	തൂടക്കം, ആരംഭം
घूस	കൈക്കൂലി
पटवारी	വില്ലേജ് ആഫീസർ
ललचना	അത്യാഗ്രഹം തോന്നുക
फारसीदाँ	പേർഷ്യൻ ഭാഷ അറിയുന്നവൻ
ईसाई मत	ക്രിസ്തുമതം
काम निकालना	കാര്യംസാധിക്കുക

सर्व सम्मानित	സമാദരണീയനായ
बरकंदाजी करना	അമിത ലാഭേച്ഛ
नियुक्त	നിയമിക്കപ്പെട്ട
रोजगार	തൊഴിൽ
खोज	തിരച്ചിൽ
ऋण	കടം
बोझ से दबे होना	അമിത ഭാരത്താൽ
घास-फूस	കള
कगारी (कगार)	തീരം
मालिक-मुख्तार	യജമാനൻ
पीट का मज्जार	ഇസ്ലാം മതപണ്ഡി തന്റെ ശവകുടീരം

लुप्त होना	അപ്രത്യക്ഷമാവുക
ऊपरी आय	പുറം വരവ്
ओहदा	പദവി
चढ़ावा	നേർച്ച
चादर	പുതപ്പ്
स्रोत	ഉറവിടം
आमदनी	വരുമാനം
बरकत	വളർച്ച
उपरांत	ശേഷം

ഖണ്ഡിക — 2

आज्ञाकारी	അനുസരണയുള്ള
अच्छा शकुन	ശുഭശകുനം
पद पर	} സ്ഥാനം
प्रतिष्ठित होना	
ठिकाना न होना	അതിരറ്റ
शुभ संवाद	നല്ല വാർത്ത
फूले न समाना	} അത്യധികം
महाजन	അമിത പലിശയ്ക്ക്
	പണം കൊടുക്കുന്നവൻ
नरम पड़ना	ശാന്തമാവുക
कलवार	വീഞ്ഞു വ്യാപാരി
लहराना	അലയടിക്കുക
हृदय में शूल उठना	അസുഖ തോന്നുക

ഖണ്ഡിക — 3

नशे में मस्त होना	ലഹരിയിൽ മുഴുകുക
कार्यकुशलता	കാര്യശേഷി
नावों का पुल	തോണിനിരത്തിയപാലം
मीठी नींद सोना	സുഖമായുറങ്ങുക
मल्लाह	വഞ്ചിക്കാരൻ
गोलमाल	കുഴപ്പം

भ्रम	തോന്നൽ
पुष्ट करना	ബലപ്പെടുത്തുക
वरदी	യൂണിഫോം
तमचा	റിവോൾവർ
बात की बात में	ഞൊടിയിടയിൽ
डाँटना	ശകാരിക്കുക
कनाफूसी	ഏഷണി

ഖണ്ഡിക — 4

चौंकना	ഞെട്ടുക
इलाका	പ്രദേശം
प्रतिष्ठित	മാന്യനായ
लेन-देन	കൊടുക്കൽ
	വാങ്ങൽ
बाट देखना	പ്രതീക്ഷിക്കുക
गूँगा	ഊമ
लदा होना	ഭാരം നിറയ്ക്കപ്പെടുക
बोरा	ചാക്ക്
टटोलना	തപ്പിനോക്കുക
नमक का ढेला	ഉപ്പിന്റെ വലിയകട്ട

ഖണ്ഡിക —5

सजीला	അലങ്കരിച്ച
अचानक	പെട്ടെന്ന്
रुखाई से	പരൂഷമായി
सरकारी हुक्म	ഗവൺമെന്റ്
	ഉത്തരവ്
गाड़ीवान	വണ്ടിക്കാരൻ
घबराए हुए	പരിഭ്രമിച്ച്
घाट	കടവ്
निश्चिंतता से	ചിന്താവിമുക്തരായി
लिहाफ	പുതപ്പ്
अपराध	കുറ്റം
भेंट चढ़ाना	പ്രീതിപ്പെടുത്തുക (കൈക്കൂലികൊടുക്കുക)
घर का मामला	വീട്ടുകാര്യം
घाट के देवता को	കടവിലെ ദേവനെ
अखंड विश्वास	പൂർണ്ണവിശ്വാസം
पान का बीड़ा	വെറ്റിലക്കെട്ട്

ഖണ്ഡിക —6

ऐश्वर्य	ഐശ്വര്യം
नमक हराम	നന്ദികെട്ടവൻ
कौड़ियों में अपना	ചില്ലിക്കാശിനു വേണ്ടി
ईमान बेचना	വിശ്വാസം വിൽക്കുക
हिरासत में लेना	കസ്റ്റഡിയിലെടുക്കുക
कड़ककर	ശർജ്ജിക്കുന്ന ശബ്ദത്തിൽ
कायदे के अनुसार	നിയമാനുസരണം
वंशी	ഓടക്കുഴൽ

ईमानदारी

उमंग	ആവേശം
चालान होगा	കോടതിയിൽ ഹാജരാക്കും
दीन भाव से	കരുണഭാവത്തിൽ
मिट जाना	നശിക്കുക
फुर्सत में	ഒഴിവു സമയത്ത്
हुक्म देना	ആജ്ഞാപിക്കുക
इज्जत (स्ത്രീ)	അഭിമാനം
स्तംभित हो जाना	സ്തംഭിക്കുക
हाथ आना	നേടുക
धूल में मिल जाना	മണ്ണടിയുക
हलचल	കുഴപ്പം, ബഹളം
कदाचित्	ഒരു പക്ഷെ
कठोर	കടുത്ത
रोब के मारे	പ്രഭാവത്താൽ

ഖണ്ഡിക —7

सहारा	ആശ്രയം
चट्टान (स्ത്രീ)	പാറ
खिसकना	വഴുതിപ്പോവുക
सांख्यिक शक्ति	സംഖ്യാബലം
भरोसा	വിശ്വാസം
मुख्तार	ക്ലാർക്ക്
भेंट करना	സമ്മാനിക്കുക
हटाना	അകറ്റുക
बुद्धिहीन	ബുദ്ധിയില്ലാത്തവൻ
दृढ़ता	ദാർഢ്യം

संग्राम	ആക്രമണം, യുദ്ധം
आक्रमण करना	ആക്രമിക്കുക
नौबत	ഘട്ടം, അവസരം
अलौकिक वीरता	അലൗകികമായ വീരത
धूल में मिल जाना	മണ്ണുടിയുക
बहुसंख्यक	സംഖ്യാബലം ഉള്ള
उछल-उछलकर	ചാടിത്തുള്ളി
सम्मुख	മുന്നിൽ
(की) भाँति	പോലെ
अटल	ഉറച്ച
देव दुर्लभ	} ദേവന്മാരായും
त्याग	
झुँझलाना	ദേഷ്യപ്പെടുക
भूखा सिंह	വിശന്നുവലഞ്ഞ സിംഹം
अविचलित	ഇളകാതെ
साहस	ധൈര്യം
गरम होना	ക്ഷുഭിതനാകുക

ഖണ്ഡിക — 8

ललकारना	വെല്ലുവിളിക്കുക
गालियाँ देना	ശകാരിക്കുക.
	ചീത്തപറയുക
निपटारा करना	പരിഹാരം
	കാണുക
कातर	വിഷാദം

असंभव	അസാധ്യമായ
पैरों तले कुचलना	ചവുട്ടി മെതിക്കുക
हृष्ट-पुष्ट	തടിച്ചുകൊഴുത്ത
हथकड़ी (स्ത്രീ)	കൈവിലങ്ങ്
यकायक	പെട്ടെന്ന്
मूर्च्छित	മോഹാലസ്യം
ഖണ്ഡിക — 9	
टीका-टिप्पणी	കുറ്റവും കുറവും
निंदा की बौछार	അസഭ്യവർഷം
रोजनामचा	ഡയറി
जाली दस्तावेज	കള്ളപ്രമാണം
गर्दन	കഴുത്ത്
अभियुक्त	പ്രതി
ग्लानि (स्ത്രീ)	} ദുഃഖം, വിഷമം, പശ്ചാത്താപം
पाप कट जाना	
अदालत	പാപ വിമുക്തനാകുക
	കോടതി

ഖണ്ഡിക — 10

अगाध वन	നിബിഡവനം
अमला	ജീവനക്കാരുടെ
बिना मोल	പ്രതിഫല
का गुलाम	മില്ലാത്ത അടിമ
विस्मित होना	ആശ്ചര്യപ്പെടുക
शस्त्र	ആയുധങ്ങൾ
गवाह	സാക്ഷി
लोभ	അത്യാഗ്രഹം
के निमित्त	കാരണത്താൽ
ठन जाना	യുദ്ധം അനിവാര്യമാവുക
स्पष्ट भाषण	തുറന്നു പറയൽ
सहानुभूति	സഹാനുഭൂതി
तत्परता से	താല്പര്യത്തോടെ
के निमित्त यूद्ध	വേണ്ടി
कानून का पंजा	നിയമത്തിന്റെ പിടി
असाध्य	സാധ്യമല്ലാത്ത
साधन करने वाला	അർപ്പിച്ചവൻ
डावाँडोल	ഇളകിയ
अनन्य वाचालता	അപൂർവ്വമായ വാചാലത

ഖണ്ഡിക — 11

दरबार	കോടതി
नशा छाना	മത്തു പിടിക്കുക
प्रमाण	തെളിവ്
निर्मूल	അടിസ്ഥാനമില്ലാത്ത

न्याय खिंचा हुआ	നീതിയുടെ ഗതി
दीख पड़ना	മാറുന്നതായി തോന്നുക
भ्रमात्मक	തെറ്റിദ്ധാരണ
भलेमानुस	സജ്ജനം
तजबीज	ഉത്തരവ്
महकमा	വകുപ്പ്
झेलना	അനുഭവിക്കുക
	സഹിക്കുക
बड़ा भारी आदमी	അതികായൻ
दुस्साहस	ദുസ്സാഹസം
दोष	കുറ്റം
सजग और सचेत	ഉണർവും ഉന്മേഷവുമുള്ള
उद्दंडता	അഹങ്കാരം, ധാർഷ്ട്യം
अविचार	വിചാരമില്ലായ്മ
बढ़ी हुई	അതിരുകവിഞ്ഞ
नमक हलाली	വിയേയത്വം
होशियार रहना	ശ്രദ്ധിച്ചിരിക്കുക
भ्रष्ट करना	അഴിമതിചെയ്യുക

ഖണ്ഡിക — 12

फैसला	വിധി
उदारता का	അതിരറ്റ ദയാവായ്പ്
सागर उमड़ना	കാണിക്കുക
स्वजन बाँधव	സ്വന്തക്കാരും
	ബന്ധുക്കളും
व्यंग बाण	കുത്തുവാക്കുകൾ
आदर के पात्र	ആദരണീയർ

उपाधियाँ	ബിരുദങ്ങൾ
ढीला चोगा	അയഞ്ഞനീണ്ട കുപ്പായം
अकड़ते हुए चलना	ഗമയോടെ നടക്കുക
विद्वत्ता	പാണ്ഡിത്യം
ഖണ്ഡിക — 13.	
व्यथित	ദുഃഖിതൻ
वैर मोल लेना	ശത്രുത സമ്പാദിക്കുക
मूल्य चुकाना	വിലവീട്ടുക
अनिवार्य	അനിവാര്യമായ
मुअत्तली का परवाना	പിറച്ചു വിടൽ ഉത്തരവ്
कुडबुड़ाना	പിറുപിറുക്കുക
मनमानी करना	തോന്നു്യാസം കാണിക്കുക
अकारण	വെറുപ്പ്
दुरवस्था	ദുഃസ്ഥിതി
अकारथ	നിഷ്ഫലമായി
सिर पीटना	} തലയ്ക്കടിക്കുക കുറ്റ ബോധം തോന്നുക
कार्य परायणता	
	കർത്തവ്യ നിർവ്വഹണം
बेचारा	നിസ്സഹായൻ
पछताना	പശ്ചാത്തപിക്കുക
भग्न-हृदय	തകർന്ന ഹൃദയത്തോടെ
टल जाना	അകന്നുപോവുക

घर में अंधेरा	}	വീട്ടിലിരുട്ടും പള്ളിയിൽ
हो पर मंदिर में		വിളളക്കും
दिया जलाना		സമൂഹത്തിന്
		നന്മ ചെയ്യുക
कामना		ആഗ്രഹങ്ങൾ
विकट रूप	}	ഭയങ്കര രൂപം
धारण करना		ധരിക്കുക
मिट्टी में	}	നശിച്ചുപോവുക
मिल जाना		
सीधे-मुँह बात	}	നേരിട്ടു സംസാരി
न करना		ക്കാതിരിക്കുക
ഖണ്ഡിക — 14		
जपना		ജപിക്കുക
द्वार		വാതിൽ
धागा		ചരട്
सींग		കൊമ്പ്
पीतल		പിച്ചള
जड़ा होना		പതിച്ചിരിക്കുക
कपूत		കുപുത്രൻ
पछहिए		പടിഞ്ഞാറൻ
निस्संतान		സന്താനമില്ലാത്തവൻ
वात्सल्यपूर्ण		വാത്സല്യപൂർണ്ണമായ
कुल तिलक	}	കുടുംബത്തിന്റെ യശസ്സ്
कीर्ति		കീർത്തി
उज्ज्वल करना		പ്രകാശിപ്പിക്കുക
अगवानी		സ്വാഗതം
दंडवत करना		നമസ്കരിക്കുക
लल्लो-चप्पो		മുഖസ്തുതി
की बातें		പറയുക

उदय होना	ഉദിക്കുക	വിലങ്ങ്
कालिख	കളങ്കം	ലജ്ജയോടെ
अभागा	നിർഭാഗ്യവാൻ	പിടിയിലമർന്ന
धर्मपरायणता	കർത്തവ്യപരായണനായ	നോക്കുക
खुशामद	മുഖസ്തുതി	സൽഭാവം
स्वेच्छा से	സ്വന്തം ഇഷ്ട പ്രകാരം	സ്വന്തം, വസ്തുക്കൾ
उच्च पदाधिकारी	ഉന്നത ഉദ്യോഗസ്ഥൻ	ബഹുമാനമില്ലായ്മ
परास्त करना	പരാജയപ്പെടുത്തുക	സ്ഥിരമായ
पुरूखा	പൂർവ്വികൻ	വിറക്കുന്ന സ്വരത്തിൽ
अर्पण करना	സമർപ്പിക്കുക	സ്ഥിര നിയമനം
ഖണ്ഡിക — 15		ഖണ്ഡിക — 16
सत्कार करना	സൽക്കരിക്കുക	കീർത്തിമാനായ
स्वाभिमान	ആത്മാഭിമാനം	സൗभाग्य की बात
ये महाशय	ഇദ്ദേഹം	വലിയ ഭാഗ്യം
ठकुरसुहांती } की बात	മുഖസ്തുതി	പൂർത്തിയാക്കുക
मन की मैल	കളങ്കം	മർമ്മജ്ഞൻ
उड़ती हुई } दृष्टि से	വലിയ	നല്ല അറിവുള്ളവൻ
त्रुटि	തെറ്റ്	മുതൽ
झलकना	പ്രകടമാവുക	ഫീകാ पड़ना
कृतज्ञता	നന്ദി	മങ്ങിപ്പോകുക
जलाना	വേദനിപ്പിക്കുക	दस्तखत
क्षमा-प्रार्थना	ക്ഷമയാചിക്കൽ	കയ്യൊപ്പ്
लज्जित करना	നാണം കെടുത്തുക	धर्मनिष्ठ
धर्म की बेड़ी	കർത്തവ്യത്തിന്റെ	കർത്തവ്യനിഷ്ഠ
		ഖണ്ഡിക — 17
		आँख डबडबाना
		कण्ठुनिरयुक्त
		प्रफुल्लित होकर
		സന്തോഷപൂർവ്വം
		संकुचित पात्र
		ചെറിയ പാത്രം
		गले लगाना
		ആലിംഗനം ചെയ്യുക
		एहसान
		നന്ദി
		श्रद्धा
		ആദരവ്

कथा का सारांश

मुंशी वंशीधर नौकरी की तलाश में निकले। सौभाग्य से उनको नमक विभाग में दारोगा का पद मिल गया। इस पद पर लोग ऊपरी आमदनी आसानी से कर लेते थे। लेकिन वंशीधर ने अपनी ईमानदारी और कार्यकुशलता से अपने अधिकारियों का दिल जीत लिया। वे एक सच्चे ईमानदार अधिकारी थे।

नमक के दारोगा के रूप में काम करते हुए वंशीधर को छह महीने ही बीते होंगे कि एक रात उन्होंने देखा कि इलाके के सबसे अधिक प्रतिष्ठित जमींदार पं० अलोपीदीन की नमक से लदी बैलगाड़ियाँ चोरी-छिपे जमुना के पुल से जा रही हैं। दारोगा वंशीधर तुरंत वहाँ पहुँचे और सारी स्थिति की जाँच पड़ताल की और गाड़ियों को रोक लिया। सूचना अलोपीदीन तक पहुँची। अलोपीदीन को रिश्वत की ताकत पर पूरा विश्वास था। वे स्वतः घटना स्थल पर आए और 40,000 तक की रिश्वत देने की पेशकश की। लेकिन वंशीधर किसी तरह भी अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। अलोपीदीन को वंशीधर ने हिरासत में ले लिया। अलोपीदीन पर मुकद्दमा चलाया गया लेकिन वे पैसे के बल पर किसी तरह बरी हो गए। ईमानदार वंशीधर को अदालत ने होशियारी से कार्य करने की चेतावनी दी।

लगभग एक सप्ताह ही बीता होगा कि दारोगा वंशीधर की ईमानदारी का पुरस्कार मिला। उन्हें उनके विभाग ने मुअत्तिल कर दिया था। इस घटना के कुछ दिनों बाद स्वयं अलोपीदीन वंशीधर के घर पहुँचे। वंशीधर के पिता ने उनका आदर सत्कार किया और अपने पुत्र के व्यवहार के लिए क्षमा याचना की। लेकिन बात इससे उल्टी थी। अलोपीदीन तो वंशीधर की ईमानदारी से प्रभावित होकर उन्हें अपनी जायदाद का मैनेजर नियुक्त करने आए थे। यह देखकर वंशीधर का हृदय भर आया और अत्यंत विनय भाव से नियुक्ति पत्र स्वीकार करते हुए अलोपीदीन को धन्यवाद दिया। अलोपीदीन ने गदगद होकर उन्हें गले लगा लिया।

6.0 ചോദ്യോത്തരങ്ങൾ

प्रश्न : वंशीधर को उसके पिता ने क्या शिक्षा दी थी ?

उत्तर : वंशीधर के पिता ने समझाया था कि नौकरी में पद और उससे मिलने वाले वेतन पर ध्यान देना जरूरी नहीं है। ऊपरी आमदनी की ओर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। वेतन पूर्णमासी के चाँद की तरह है, जो रोज धीरे-धीरे घटता जाता है और एक दिन अमावस्या के चाँद की तरह खत्म हो जाता है। पर ऊपरी आमदनी बहता हुआ पानी है जो प्यास बुझाता है। वेतन मनुष्य देता है, ऊपरी आमदनी ईश्वर।

प्रश्न : वंशीधर को अपनी कर्तव्यपरायणता का क्या परिणाम मिला ?

उत्तर : वंशीधर योग्य ईमानदार और कर्तव्यपरायण दारोगा थे। उनके अधिकारी इससे खुश थे। पर कर्तव्यपरायण को धन की ताकत के सामने हार खानी पड़ी। उन्होंने अलोपीदीन को गिरफ्तार कर अपनी नौकरी ही खो दी। कर्तव्यपरायणता का इससे बुरा परिणाम क्या हो सकता है ?

प्रश्न : कहानी में धर्म और धन के युद्ध में किसकी विजय हुई?

उत्तर : वंशीधर धर्म के रास्ते पर थे तो अलोपीदीन के पास धन की शक्ति। वंशीधर ने अलोपीदीन को गिरफ्तार कर धर्म की जीत दिखाई पर बाद में अदालत ने अलोपीदीन को निर्दोष बताकर धन की जीत दिखाई। वंशीधर को अपना मैनेजर बनाकर अलोपीदीन ने भी यह दिखला दिया कि न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती है, नचाती है।

യൂണിറ്റ് -2

7.0 പാഠഭാഗത്തെക്കുറിച്ച്

സന്താനങ്ങളില്ലെങ്കിലും മാതൃത്വത്തിനു വെമ്പൽ കൊള്ളുന്ന രാമേശ്വരിയുടെ മാനസിക സംഘർഷമാണ് വിശ്വഭർതാവിന് ശർമ്മാകൗശിക് എഴുതിയ താഴെ എന്ന കഥയിൽ വർണ്ണിച്ചിരിക്കുന്നത്. അവരുടെ ഭർത്താവ് ബംബുറാംജീദാസ് അനുജന്റെ പുത്രനോടു വാത്സല്യം പ്രകടിപ്പിക്കുകവഴി തന്റെ ആശ്വാസം കണ്ടെത്തിയിരുന്നു. എന്നാൽ രാമേശ്വരിക്ക് ഇതു സഹിക്കാനായില്ല. ഭർത്താവിന്റെ ഈ പെരുമാറ്റം സ്വന്തമായി ഒരു കുഞ്ഞിനെ ലാളിക്കാനുള്ള ആഗ്രഹമില്ലായ്മയും തന്നോടുള്ള അവഗണനയുമായി അവർ കരുതി. ഈ മനോഭാവം മൂലം ഒരിക്കൽ രാമേശ്വരി തന്റെ മടിയിൽ കളിച്ചുകൊണ്ടിരുന്ന മനോഹരിനെ തള്ളിമാറ്റി. ഇതുമൂലം രാമേശ്വരിയും ഭർത്താവുമായി വഴക്കുണ്ടായി. കുട്ടിയോട് ഇങ്ങനെ മോശമായി പെരുമാറിയതിന് റാംജി ഭാര്യയെ ശകാരിച്ചു.

രാമേശ്വരിയ്ക്ക് സ്വന്തം സന്താനങ്ങൾ ഇല്ലായിരുന്നുവെങ്കിലും അവരിൽ മാതൃത്വത്തിന്റെ മൂല വികാരങ്ങൾ ഉണ്ടായിരുന്നു. തന്റെ വന്ധ്യതയെക്കുറിച്ച് ഓർമ്മിക്കാതെ ഇരിക്കുന്ന സന്ദർഭത്തിൽ അവർ കുഞ്ഞുങ്ങളോട് വാത്സല്യം പ്രകടിപ്പിച്ചിരുന്നുവെങ്കിലും യഥാർത്ഥ സ്ഥിതിയെക്കുറിച്ചു ഓർമ്മിക്കുമ്പോൾ അവർ മറ്റു കുഞ്ഞുങ്ങളെ വെറുത്തിരുന്നു. ഒരിക്കൽ നൂൽ പൊട്ടി നിലഞ്ഞുവീഴാൻ തുടങ്ങിയ പട്ടം പിടിച്ചെടുക്കാൻ ശ്രമിക്കവെ മനോഹർ ടെറസ്സിൽ നിന്നു കാലുതെറ്റി വീണു. കുട്ടിയെ അപകടത്തിൽ നിന്നും രക്ഷിക്കാമായിരുന്നുവെങ്കിലും വൈകാരിക സംഘടനത്തിൽപ്പെട്ട രാമേശ്വരി ആ കുട്ടിയെ രക്ഷിക്കാൻ ഒരുമ്പെട്ടില്ല. പിന്നീട് ഈ സംഭവം അവരുടെ ഹൃദയത്തെ വ്രണപ്പെടുത്തി. തുടർന്നു അവർ രോഗിയായി എന്നാൽ മനോഹർ സുഖം പ്രാപിച്ചതറിഞ്ഞപ്പോൾ അവർക്കു അവനോടു മാതൃസഹജമായ വാത്സല്യം തോന്നി. അവനെ താലോലിക്കുവാനും തുടങ്ങി.

8.0—आधार पाठ

ताई

विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

(1)

1. “ताऊजी हमें लेलगाली (रेलगाड़ी) लो देगो?”—कहता हुआ एक पाँच वर्ष का बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा।

बाबू साहബ ने दोनों बाहें फैलाकर कहा—“हाँ बेटा, ला देंगे।”

उठा लिया, और उसका मुख चूमकर बोले—“क्या करोगे रेलगाड़ी का?”

बालक बोला—“उसमें बैठ के बली दूँ (बड़ी दूर) जाएँगे। हम भी जाएँगे, चुन्नी को भी ले जाएँगे। बाबूजी को नहीं ले जाएँगे। हमें लेलगाली नहीं ला देते। ताऊजी, तुम ला दोगे, तो तुम्हें ले जाएँगे।”

बाबू—“और किसको ले जाएगा?”

बालक दम-भर सोचकर बोला—“बछ, (बस) ओल किछी को (और किसी) को नहीं ले जाएँगे।”

2. पास ही बाबू रामदास की पत्नी बैठी थीं। बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा—“और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा?”

बालक कुछ देर तक अपनी ताई की ओर देखता रहा। ताईजी उस समय कुछ चिढ़ी हुई—सी बैठी थीं। बालक को उनके मुख का वह भाव अच्छा न लगा, अतएव वह बोला—“ताई को नहीं ले जाएँगे।”

3. ताईजी बोलीं—“अपने ताऊजी को ही ले जा! मुझे माफ कर।”

ताई ने यह बात बड़ी रूखाई के साथ कही! बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत ताड़ गया। बाबू साहब ने फिर पूछा—“ताई को क्यों नहीं ले जाएगा?”

बालक—“ताई हमें प्याल (प्यार) नहीं कलतीं (करती)।”

बाबू—“जो प्यार करें, तो ले जाएगा।”

बालक मौन रहा।

बाबू साहब ने फिर पूछा—“क्यों रे, बोलता नहीं? ताई प्यार करें तो रेल पर बिठाकर ले जाएगा?”

बालक ने ताऊजी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर ‘हाँ’ कह दिया।

बाबू साहब उसे अपनी पत्नी के पास ले जाकर उनसे बोले—“लो, इसे प्यार कर लो, तो यह तुम्हें भी ले जाएगा।” परंतु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की यह बात अच्छी नहीं लगी। वह चिढ़कर बोली—“तुम्हीं रेल पर बैठकर जाओ, मुझे नहीं जाना है।”

4. बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया। वे बच्चे को उसकी गोद में बिठाने की चेष्टा करते हुए बोले—“प्यार नहीं करोगी तो फिर रेल में नहीं बिठाएगा—क्यों रे मनोहर?”

मनोहर ने ताऊ की बात का उत्तर नहीं दिया। उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से ढकेल दिया। मनोहर नीचे गिर पड़ा। शरीर में तो चोट नहीं लगी; पर हृदय में चोट लगी।

बालक रो पड़ा।

बाबू साहब ने बालक को गोद में उठा लिया, उसे चुप कराया और उसे कुछ पैसे तथा रेलगाड़ी ला देने का वचन देकर छोड़ दिया। बालक मनोहर भय-पूर्ण दृष्टि से अपनी ताई की ओर ताकता हुआ उस स्थान से चला गया।

मनोहर के चले जाने पर बाबू रामजीदास रामेश्वरी से बोले—“तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है? बच्चे को ढकेल दिया! यदि उसके चोट लग जाती तो?”

रामेश्वरी मुँह बनाकर बोली—“लग जाती तो अच्छा होता। क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते थे? आप ही तो उसे मेरे सिर पर डालते थे; आप ही अब ऐसी बातें करते हैं।”

बाबू साहब कुढ़कर बोले—“इसी को सिर पर डालना कहते हैं?”

रामेश्वरी—“और नहीं तो किसे कहते हैं! तुम्हें तो अपने आगे और किसी का दुख-सुख सूझता ही नहीं। न जाने कब किसका जी कैसा होता है तुम्हें इन बातों की कोई परवा ही नहीं।”

बाबू—“बच्चों की प्यारी-प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो जाता है।”

रामेश्वरी—“तुम्हारा हो जाता होगा। पराए धन से भी कहीं घर भरता है।”

6. बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले—“यदि अपना सगा भतीजा भी पराया धन कहा जा सकता है, तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे।”

रामेश्वरी कुछ उत्तेजित होकर बोली—“बातें बनाना बहुत आता है। तुम्हारा भतीजा है, तुम चाहे जो समझो; पर मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगती। हमारे भाग्य ही फूटे हैं! नहीं तो ये दिन काहे को देखने पड़ते। तुम्हारा चलन तो दुनिया से निराला है। आदमी संतान के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं—पूजा-पाठ कराते हैं, व्रत रखते हैं, पर तुम्हें इन बातों से क्या काम? रात-दिन भाई-भतीजों में मगन रहते हो।”

7. बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव झलक आया। उन्होंने कहा—पूजा-पाठ, व्रत सब अंधविश्वास है। जो वस्तु भाग्य में नहीं, वह पूजा-पाठ से कभी प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा तो यह अटल विश्वास है।

ताई कुछ-कुछ रुआँसे स्वर में बोली—“ऐसे ही विश्वास पर सब बैठ जाँ तो काम कैसे चले ? सब विश्वास पर ही बैठे रहें, आदमी काहे को किसी बात के लिए चेष्टा क्यों करे।”

बाबू साहब पत्नी की बात का उत्तर न देकर वहाँ से चले गए।

(2)

8. बाबू रामजीदास कपड़े के व्यापारी हैं। इनके एक छोटा भाई भी है। उसका नाम कृष्णदास। दोनों भाइयों का परिवार एक साथ रहता है। बाबू रामजीदास की आयु 35 वर्ष के लगभग है, और छोटे भाई कृष्णदास की 21 के लगभग। रामजीदास निस्संतान हैं। कृष्णदास के दो संतान हैं। एक पुत्र-मनोहर-और एक कन्या चुन्नी है। कन्या की आयु दो वर्ष के लगभग है।

रामजीदास अपने छोटे भाई और उसकी संतान पर बड़ा स्नेह रखते हैं—ऐसा स्नेह कि उसके प्रभाव से उन्हें अपनी संतान-हीनता कभी खटकती नहीं। छोटे भाई की संतान को वे अपनी संतान समझते हैं। दोनों बच्चों को भी रामजीदास से इतना प्यार है कि उन्हें अपने पिता से भी अधिक समझते हैं।

परंतु रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतान-हीनता का बड़ा दुख है। वह दिन-रात संतान ही के सोच में घुला करती हैं। छोटे भाई की संतान पर पति का प्रेम उनकी आँखों में काँटे की तरह खटकता है।

9. रात को भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर रामजीदास शैय्या पर लेटे हुए शीतल और मंद वायु का आनंद ले रहे थे। पास ही दूसरी शैय्या पर रामेश्वरी, हथेली पर सिर रखे, किसी चिंता में डूबी हुई थीं। दोनों बच्चे अभी बाबू साहब के पास से उठकर अपनी माँ के पास गए थे।

बाबू साहब ने अपनी पत्नी की ओर करवट लेकर कहा—“आज तुमने मनोहर को इस बुरी तरह ढकेला था कि मुझे अब तक उसका दुख है। कभी-कभी तो तुम्हारा व्यवहार बिल्कुल ही निर्मम हो जाता है।”

रामेश्वरी बोलीं—“तुम्हीं ने मुझे ऐसा बना रखा है। उस दिन उस पंडित ने कहा था कि हम दोनों के जन्म-पत्र में संतान का योग है, और उपाय करने से संतान हो भी सकती है। आदमी उपाय तो करके देखता है। फिर होना-न-होना तो भगवान के अधीन है।”

10. बाबू साहब हँसकर बोले—“तुम्हारी-जैसी सीधी स्त्री भी—क्या कहूँ, तुम इन ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करती हो, जो बिल्कुल झूठे और धूर्त हैं।”

रामेश्वरी चिढ़कर बोली—“तुम्हें तो सारा संसार झूठा ही दिखाई पड़ता है। अंग्रेजी क्या पढ़ी, अपने आगे किसी को गिनते ही नहीं।”

बाबू साहब—“तुम बात तो समझती नहीं, अपनी ही कहे जाती हो। मैं यह नहीं कहता कि ज्योतिष-शास्त्र झूठा है। संभव है, वह सच्चा हो। परंतु ज्योतिषियों में अधिकांश झूठे होते हैं।”

रामेश्वरी—“हूँ, सब झूठ ही हैं, तुम्हीं एक बड़े सच्चे हो! अच्छा, एक बात पूछती हूँ। भला तुम्हारे जी में संतान की इच्छा क्या कभी नहीं होती?”

11. इस बार रामेश्वरी की बात बाबू साहब के हृदय को छू गई। वे कुछ देर चुप रहे। एक लंबी साँस लेकर बोले—“भला ऐसा कौन होगा, जिसके हृदय में संतान का सुख देखने की इच्छा न हो? परंतु किया क्या जाए? जब नहीं है, और न होने की कोई आशा ही है, तब उसके लिए व्यर्थ चिंता करने से क्या लाभ? इसके सिवा जो बात अपनी संतान से होती, वही भाई की संतान से भी हो रही है। जितना स्नेह अपनी पर होता, उतना ही इन पर भी है।”

रामेश्वरी कुढ़कर बोलीं—“तुम्हारी समझ को मैं क्या कहूँ। इसी से तो रात-दिन जला करती हूँ। भला यह तो बताओ कि तुम्हारे पीछे क्या इन्हीं से तुम्हारा नाम चलेगा?”

बाबू साहब हँसकर बोले—“अरे तुम भी कहाँ की बेकार बातें कर रही हो। नाम संतान से नहीं चलता। नाम अपने अच्छे कर्मों से चलता है। तुलसीदास और सूरदास का नाम क्या उनकी संतान के ही कारण चल रहा है? सच पूछो, तो संतान से जितनी नाम चलने की आशा रहती है, उतनी ही नाम डूब जाने की आशंका रहती है।”

12. रामेश्वर—“शास्त्र में लिखा है कि जिसके पुत्र नहीं होता, उसकी मुक्ति नहीं होती।”

बाबू—“मुक्ति पर मुझे विश्वास ही नहीं। यदि मुक्ति होना मान भी लिया जाए, तो यह कैसे माना जा सकता है कि सब पुत्रवानों की मुक्ति हो ही जाती है?”

रामेश्वरी—“अब तुमसे कौन बहस करे। तुम तो अपने सामने किसी की मानते ही नहीं।”

(3)

13. शाम का समय था। रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थी। पास ही उनकी देवरानी भी बैठी थीं। दोनों बच्चे छत पर खेल रहे थे। रामेश्वरी उनके खेल को देख रही थी। इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था। सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा। वह खिलखिलाती हुई दौड़कर रामेश्वरी की गोद में जा गिरी। रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गई। उन्होंने दोनों बच्चों को उसी प्रकार हृदय से लगा लिया जिस प्रकार वह मनुष्य लगाता है, जो कि बच्चों के लिए तरस रहा हो। उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता, तो उसे यही विश्वास होता कि रामेश्वरी ही उन बच्चों की माता है।

14. दोनों बच्चे बड़ी देर तक उनकी गोद में खेलते रहे। सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई।

“मनोहर, ले रेलगाड़ी!” कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए। उनकी आवाज सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे। रामजीदास ने पहले दोनों को खूब प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे।

जब रामेश्वरी ने पति को बच्चों में मग्न होते देखा तो उसके मन में बच्चों के प्रति घृणा और द्वेष का भाव जाग उठा।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए, और मुस्कराकर बोले—“आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं? इससे मालूम पड़ता है कि तुम्हारे हृदय में भी इनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है।”

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी। उन्हें अपनी कमजोरी पर बड़ा दुख हुआ। वह दुख इस वाक्य से और भी बढ़ गया कि उनकी कमजोरी पति पर प्रकट हो गई, यह बात उनके लिए असहाय हो उठी।

रामजीदास बोले—“इसलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना व्यर्थ है। यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो, तो तुम्हें ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो।”

15. यह बात बाबू साहब ने शुद्ध हृदय से कही थी, परंतु रामेश्वरी को वह व्यंग लगा। उन्होंने मन ही मन कहा—इन्हें मौत भी नहीं आती। मर जाएँ, पाप कटे! हमेशा आँखों के सामने रहने से प्यार करने को जी ललचा ही उठता है।

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा—“अब झेंपने से क्या लाभ? अपने प्रेम को छिपाने की चेष्टा करना व्यर्थ है।”

रामेश्वरी जल-भुनकर बोलीं—“मुझे क्या पड़ी है, जो मैं प्रेम करूँगी? एक घर में रहने से कभी-कभी हँसना-बोलना पड़ता है। अभी परसों जरा यों ही ढकेल दिया, उस पर तुमने सैकड़ों बातें सुनाई।”

बाबू साहब को पत्नी के वाक्य सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कर्कश स्वर में कहा—“न जाने कैसे हृदय की स्त्री है। अभी अच्छी-खासी बैठी बच्चों को प्यार कर रही थी। मेरे आते ही बदल गयी। अपनी इच्छा से चाहे जो करे, पर मेरे कहने से उल्टा

व्यवहार करने लगती है। यदि मेरा कहना ही बुरा मालूम होता है तो न कहा करूँगा। पर इतना याद रखो कि मुझे ये बच्चे भी उतने ही प्यारे हैं जितनी तुम।”

रामेश्वरी ने इसका उत्तर न दिया और वह रोने लगी।

16. जैसे-जैसे बाबू रामजीदास का स्नेह दोनों बच्चों पर बढ़ता जाता था, वैसे ही वैसे रामेश्वरी के द्वेष और घृणा की मात्रा बढ़ती जाती थी। प्रायः बच्चों के पीछे पति-पत्नी में कहा-सुनी हो जाती थी, और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे। जब रामेश्वरी ने देखा कि बच्चों के कारण ही वह पति की नजरों से गिरती जा रही है, तब उनके हृदय में बड़ा तूफान उठा। उन्होंने सोचा—पराये बच्चों के पीछे यह मुझे हर समय बुरा-भला कहा करते हैं। इनके लिए बच्चे ही सब कुछ हैं, मैं कुछ भी नहीं! ये पैदा होते ही क्यों न मर गए। इन्होंने ही मेरा घर सत्यानाश कर रखा है।

इस प्रकार एक दिन रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी। उनके हृदय में अनेक प्रकार के विचार आ रहे थे। विचार और कुछ नहीं, वही अपनी निज की संतान का अभाव, पति का भाई की संतान के प्रति अनुराग इत्यादि। कुछ देर बाद वह अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए उठकर टहलने लगीं।

वे टहल ही रही थीं कि मनोहर दौड़ता हुआ आया। मनोहर को देखकर उनको बहुत क्रोध आया और वे छत की चहार दीवारी पर हाथ रखकर खड़ी हो गई।

17. संध्या का समय था। आकाश में रंग-बिरंगी पतंगें उड़ रही थीं। मनोहर कुछ देर तक खड़ा पतंगों को देखता और सोचता रहा कि कोई पतंग कटकर उसकी छत पर गिरे तो क्या ही आनंद आए। कुछ देर तक पतंग गिरने की आशा करने के बाद वह दौड़कर रामेश्वरी के पास आया और उनकी टाँगों में लिपटकर बोला—“ताई हमें पतंग मँगा दो।” रामेश्वरी ने झिड़ककर कहा—“चल हट, अपने तारु से माँग जाकर।”

मनोहर कुछ अप्रतिभ होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा। थोड़ी देर बाद उससे फिर न रहा गया। इस बार उसने बड़े लाड में आकर अत्यंत करुण स्वर में कहा—“ताई, पतंग मँगा दो.....हम भी उड़ाएँगे।”

इस बार उसकी प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा कुछ पसीज गया। वे कुछ देर तक उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखती रहीं। फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन-ही-मन कहा—“यदि यह मेरा पुत्र होता, तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती, यही जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लूँ।”

यह सोचकर वह उसके सिर पर हाथ फेरनेवाली ही थीं कि इतने में मनोहर उन्हें मौन देखकर बोला—“तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी, तो ताऊजी से कहकर तुम्हें पिटवाएँगे।”

18. यद्धपि बच्चे की इस बात में भी बड़ी मधुरता थी तथापि रामेश्वरी का मुख क्रोध के मारे लाल हो गया। वह उसे झिड़ककर बोली—“जा कह दे अपने ताऊजी से। देखूँ, वे मेरा क्या कर लेंगे?”

मनोहर डरकर उनके पास से हट गया, और फिर ललचाई आँखों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा।

इधर रामेश्वरी ने सोचा—यह सब ताऊजी के दुलार का फल है कि बालिशत भर का लड़का मुझे धमकाता है। ईश्वर करे इस दुलार पर बिजली टूटे।

19. उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई। मनोहर ने पतंग को छज्जे पर जाते देखा। पतंग पकड़ने के लिए वह दौड़कर छज्जे की ओर चला। पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे घर के आँगन में जा गिरी। एक पैर छज्जे की मुँडेर पर रखकर मनोहर ने नीचे आँगन में झाँका, और पतंग को आँगन में गिरते देख प्रसन्नता के मारे फूला न समाया। वह नीचे आने के लिए शीघ्रता से घूमा, परंतु घूमते समय मुँडेर पर से उसका पैर फिसल गया। उसके दोनों हाथों में मुँडेर आ गई। वह उसे पकड़कर लटक गया, और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया, “ताई!” रामेश्वरी ने धड़कते हुए हृदय से इस घटना को देखा। उसके मन में आया कि अच्छा है, मरने दो, सदा के लिए पाप कट जाएगा। यह सोचकर वह एक क्षण के लिए रूकीं। उधर मनोहर के हाथ मुँडेर पर से फिसलने लगे। वह अत्यंत भय तथा करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया—“अरी ताई!” रामेश्वरी की आँखें मनोहर की आँखों से जा मिलीं। उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उसका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा

ही था कि मनोहर के हाथ से मुँडेर छूट गई। वह नीचे आ गिरा। रामेश्वरी चीख मारकर छज्जे पर गिर पड़ी।

20. रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार में बेहोश पड़ी रही। कभी-कभी वह जोर से चिल्ला उठती, और कहती—“देखो-देखो, वह गिरा जा रहा है—उसे बचाओ—दौड़ो—मेरे मनोहर को बचा लो।” कभी वह कहती—“बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं बचाया। हाँ-हाँ, मैं चाहती, तो बचा सकती थी—मैंने देर कर दी।” इसी प्रकार के प्रलाप वह किया करती।

मनोहर की टाँग की हड्डी उतर गई थी। हड्डी बिठा दी गई। वह धीरे-धीरे ठीक होने लगा।

एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का बुखार कम हुआ। अच्छी तरह होश आने पर उन्होंने पूछा—“मनोहर कैसा है?”

रामजीदास ने उत्तर दिया—“अच्छा है।”

रामेश्वरी—“उसे मेरे पास लाओ।”

मनोहर रामेश्वरी के पास लाया गया। रामेश्वरी ने उसे बड़े प्यार से हृदय से लगाया। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई।

रामेश्वरी कुछ दिनों बाद पूर्ण स्वस्थ हो गई। मनोहर तो अब उनका प्राणाधार हो गया है—उसके बिना उन्हें एक क्षण भी चल नहीं पड़ती।

9.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

ഖണ്ഡിക—1

താई	അച്ഛന്റെ മുത്ത	बस और किसी	} മറ്റാരെയുമില്ല
	സഹോദരന്റെ ഭാര്യ	को नहीं	
താऊജി	അച്ഛന്റെ	(यह, ऑल किछी)	} മടിത്തട്ട്
	മുത്ത സഹോദരൻ	गोद	
चूमना	ചുംബിക്കുക		

ഖണ്ഡിക —2

इशारा करना	ചൂണ്ടിക്കാണിക്കുക
चिढ़ना	ദേഷ്യപ്പെടുക
मुख का भाव	മുഖഭാവം

ഖണ്ഡിക —3

रुखाई	പരക്കൻ ഭാവം
शुष्क व्यवहार	നീരസമായ പെരുമാറ്റം
चुहलबाजी	കളിതമാശ
ताड़ना	ഊഹിക്കുക

ഖണ്ഡിക —4

चेष्टा	പരിശ്രമം
ढकेलना	തള്ളിമാറ്റുക
वचन देना	വാക്യംകൊടുക്കുക
ताकना	തൂറിച്ചുനോക്കുക

ഖണ്ഡിക —5

चोट लगना	മുറിവേൽക്കുക
मुँह लटकाना	മുഖംവീർപ്പിക്കുക
परवाह	ശ്രദ്ധ

ഖണ്ഡിക —6

सगा भतीजा	സ്വന്തം അനന്തരവൻ
पराया	അന്യന്റെ
भाग फूटना	കഷ്ടകാലം
चलन	പെരുമാറ്റരീതി
निराला	വിചിത്രമായ

ഖണ്ഡിക —7

मुँह लगाना	ഇടപെടുക
अटल	ഉറച്ച
रूआंसा	കരയുന്നപോലെ

ഖണ്ഡിക —8

आढ़त	ഏജൻസി
निस्संतान	സന്താനമില്ലാത്തവൻ
अभाव खटकना	ഇല്ലായ്മ തോന്നുക

ഖണ്ഡിക —9

निवृत्त होकर	സ്വതന്ത്രനായി
चिंता में डूबना	ചിന്തയിൽ മുഴുകുക
अधिकांश	മിക്കവാറും
अपनी ही ओंटे जाना	താൻ പറഞ്ഞതുതന്നെ വീണ്ടും പറഞ്ഞുകൊണ്ടിരിക്കുക

ठगते फिरना	ചതിച്ചുനടക്കുക
जोग (योग)	സാധ്യത
अधीन होना	കൈക്കലാവുക
शय्या (സ്ത്രീ)	കിടക്ക

मंद वायु	ഇളംകാറ്റ്
----------	-----------

ഖണ്ഡിക —10

धूर्त	വഞ്ചകൻ
-------	--------

ഖണ്ഡിക—11

हृदय को छूना	ഹൃദയത്തെ സ്പർശിക്കുക
अच्छे कर्म	സത്പ്രവൃത്തി

आशंका (സ്ത്രീ) ഭയവും സംശയവും	
की बदौलत	മുഖാന്തിരം
नाम डूबना	സൽപേർ നശിക്കുക
ഖണ്ഡിക — 12	
मुक्ति	മോക്ഷം
बहस करना	വാദവിവാദം ചെയ്യുക
ഖണ്ഡിക — 13	
देवरानी	ഭർത്താവിന്റെ ഇളയ സഹോദരന്റെ ഭാര്യ
सहसा	പെട്ടെന്ന്
ഖണ്ഡിക — 14	
कमजोरी	ദൗർബല്യം
व्यर्थ	വ്യർത്ഥമായി
ഖണ്ഡിക — 15	
व्यंग्य	കളിയാക്കൽ
तीक्ष्ण गंध	രൂക്ഷ ഗന്ധം
कर्कश स्वर में	കർക്കശമായ സ്വരത്തിൽ
जी ललचना	മോഹം തോന്നുക
झेंपना	ലജ്ജിക്കുക
मेरे कहने से	ഞാൻ പറഞ്ഞാൽ
छिपाना	ഒളിപ്പിക്കുക
ഖണ്ഡിക — 16	
कटु वचन	പരുഷ വാക്കുകൾ
नजर से गिरना	മതിപ്പ് കുറയുക
बुरा भला कहना	ചീത്ത പറയുക
तूफान	കൊടുങ്കാറ്റ്

सत्यानाश	പൂർണ്ണ നാശം
अभाव	ഇല്ലായ്മ
ഖണ്ഡിക — 17	
रंग-बिरंगी पतंगें	വിവിധ വർണ്ണത്തിലുള്ള പട്ടങ്ങൾ
कलेजा पसीजना	മനസ്സലിയുക
स्थिर दृष्टि से	ഇമവെട്ടാതെ
अप्रतिभ होकर	അങ്കലപ്പോടെ
लाड़	വാത്സല്യം
लिपटना	കെട്ടിപ്പിടിക്കുക
झिड़कना	ശുൺഠി പിടിക്കുക
छाती से लगाना	മാറോടണയ്ക്കുക
प्रार्थना	അഭ്യർത്ഥന
करुणास्वर में	ദീനസ്വരത്തിൽ
हाथ फेरना	തലോടുക
ഖണ്ഡിക — 18	
मधुरता (സ്ത്രീ) മാധുര്യം	
मुँह लाल होना	} മുഖം ചുമന്നുപോകുക (ദേഷ്യം പിടിക്കുക)
दुलार	
धमकाना	ഭീഷണിപ്പെടുത്തുക
सतृष्ण नेत्रों से	ആർത്തിയുള്ള കണ്ണുകളോടെ
बिजली टुटे!	ഇടിവീഴട്ടെ

ഖണ്ഡിക — 19

छजा ബാൽക്കണി

मुँडेर കൈവരിച്ചുവർ

झाँकना എത്തിനോക്കുക

प्रसन्नता के मारे } സന്തോഷത്താൽ

फूला न समाना } മതിമറക്കുക

फिसलना വഴുതുക

व्याकुल होकर വ്യാകുലപ്പെട്ടുകൊണ്ട്

चीख मारना നിലവിളിക്കുക

कलेजा मुँह को } ദുഃഖാധിക്യത്താൽ
आना } കുപിതനാകുക

ഖണ്ഡിക — 20

बेहोश होकर മോഹാലസ്യയായി

प्रलाप പ്രലാപം

हड्डी बिठा } പൊട്ടിയ എല്ല

दी गई } നേരെയാക്കി

प्राणाधर പ്രിയപ്പെട്ട

आँसुओं की झड़ी അശ്രുധാര

हिचकी (സ്ത്രീ) വിക്കൽ

10.0 കഥ-സംഗ്രഹം

रामजीदास कपड़े के व्यापारी थे। उनके पास पैसा था पर वे निस्संतान थे। वे अपने भाई कृष्णदास के दो बच्चों मनोहर और उसकी बहन को अपने बच्चों की तरह प्यार करते थे। मगर उनकी पत्नी रामेश्वरी को यह पसंद न था। वह यह नहीं चाहती थी कि उनका पति दूसरों के बच्चे को प्यार करे।

एक दिन प्यार से रामजीदास ने बालक मनोहर को रामेश्वरी की गोद में डाल दिया। रामेश्वरी ने बच्चे को ढकेल दिया। पत्नी का यह व्यवहार रामजीदास को बुरा लगा। उन्होंने रामेश्वरी के इस दुर्व्यवहार की निंदा की। पर रामेश्वरी ने उनको बताया कि उनका (रामजीदास का) व्यवहार ही इस व्यवहार का कारण है।

चाहे जो हो, बच्चों के प्रति रामजीदास का प्यार बना रहा। रामेश्वरी भी बच्चों से प्यार करती थी, पर उसी समय वह भूल जाती थी कि उसके बच्चे नहीं हैं। एक बार रामजीदास ने रामेश्वरी को बच्चों के साथ खेलते और उनको प्यार करते देख लिया था। रामजीदास को वह अच्छा लगा। पर रामेश्वरी इस प्रेम को दिखलाना नहीं चाहती थी।

एक दिन रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी थी। मनोहर पतंग पकड़ने के लिए आया। उसने अपनी ताई से पतंग ला देने को कहा। ताई ने जब कहा कि अपने ताऊ से माँगो तो बच्चे ने उत्तर दिया—“ताऊजी से कहकर तुम्हें पिटवाएँगे।” यह सुनकर ताई को गुस्सा आ गया। इसी बीच एक कटी हुई पतंग को पकड़ने के लिए मनोहर दौड़ा। पतंग आँगन

<p>© C.H.D. Govt. of India</p>	<p>पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग ഡിപ്പാർട്ട്മെന്റ് ഓഫ് കറസ്പോണ്ടൻസ് കോഴ്സ് केंद्रीय हिंदी निदेशालय സെൻട്രൽ ഹിന്ദി ഡയറക്ടറേറ്റ്</p>	<p>मलयालम माध्यम डिप्लोमा कोर्स</p>
<p>ഹിന്ദി ഡിപ്ലോമ കോഴ്സ് उत्तर पत्र } ഉത്തരക്കടലാസ് } 17</p>		<p>उ.प. } R.S. } 17 & 18</p>

വിദ്യാർത്ഥിക്ക് ഉത്തരക്കടലാസ് കിട്ടിയ തീയതി പ്രാപ്താंक }
ഡയറക്ടറേറ്റിൽ ഉത്തരക്കടലാസ് കിട്ടിയ തീയതി മാർക്ക് }/20

<p>ഉത്തരക്കടലാസ് അയയ്ക്കേണ്ട വിലാസം</p> <p>The Asstt. Education Officer (Malayalam) Department of Correspondence Courses, Central Hindi Directorate, West Block-VII, R.K. Puram, New Delhi - 110066 (INDIA)</p>	<p>മേൽവിലാസം : (ഇംഗ്ലീഷിൽ)</p> <p>റോൾ നമ്പർ <table border="1" data-bbox="1053 873 1359 952" style="display: inline-table; vertical-align: middle;"></table></p> <p>പേര്</p> <p>മേൽവിലാസം</p> <p>.....</p> <p>പിൻകോഡ്</p>
---	--

അഭ്യംസം-1

निम्नलिखित प्रश्नों के संभावित उत्तर नीचे दिए गए हैं। उनमें से ठीक उत्तर छांटकर लिखें।

ചുവടെ തന്നിരിക്കുന്ന ചോദ്യങ്ങൾക്കു യോജിക്കുന്ന ഉത്തരങ്ങൾ തിരഞ്ഞെടുത്ത് എഴുതുക.

1. लेखक साईकिल लेकर घर से क्यों निकला?
(क) उसको काला नगर से कुछ सामान लाना था।
(ख) घर में गर्मी लग रही थी।

(ग) परीक्षाफल न निकलने से उनका मन अशांत हो रहा था।

.....
.....

2. चाचाजी ने लेखक का प्रेम से स्वागत किया-क्यों?

(क) क्योंकि वे उसे पहले से जानते थे।

(ख) क्योंकि वे उनकी पुस्तक 'सुखमय जीवन' से प्रभावित थे।

(ग) वे अपनी बेटी की शादी उससे करना चाहते थे।

.....
.....

3. 'सुखमय जीवन' के पुस्तक के बारे में कमला की मां क्या कहती थी?

(क) यह किसी संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है।

(ख) लेखक ने अपने अनुभव से यह पुस्तक लिखी है।

(ग) लेखक ने पुस्तक में सुनी-सुनाई बातें लिखी हैं।

.....
.....

4. छोटे जादूगर ने एक रुपए से क्या खरीदा?

(क) उसने अपनी माँ के लिए कंबल खरीदा।

(ख) उसने अपने बाबूजी के लिए दवा खरीदी।

(ग) उसने अपने लिए कमीज खरीदी।

.....

.....

5. छोटे जादूगर की माँ ने उससे जल्दी आने के लिए क्यों कहा था?

(क) छोटे जादूगर के पिता जेल से आने वाले हैं।

(ख) मेरी अंतिम घड़ी समीप है।

(ग) तुम्हें मेरे लिए बाजार से दवा लानी है।

.....

.....

അഭ്യാസം-2

‘सुखमय जीवन’, ‘छोटा जादूगर’ कहानियों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

‘सुखमय जीवन’, ‘छोटा जादूगर’ എന്നീ കഥകളെ അടിസ്ഥാനമാക്കി ചുവടെ തന്നിരിക്കുന്ന ചോദ്യങ്ങൾക്കു ഉത്തരം എഴുതുക.

(क) (1) लेखक को रास्ते में क्यों रुकना पड़ा?

.....

.....

.....

(2) बालिका ने लेखक का नाम सुना तो वह क्यों खुश हुई?

.....

.....

.....

(3) 'सुखमय जीवन' पढ़ने के बाद चाचाजी ने मन में लेखक के बारे में क्या सोचा था?

.....

.....

.....

(ख) (1) छोटा जादूगर खेल क्यों दिखाता था?

.....

.....

.....

(2) आखिरी दिन छोटे जादूगर का खेल क्यों नहीं जम रहा था?

.....

.....

.....

(3) छोटे जादूगर के बारे में तीन वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

उत्तर-3

'सुखमय जीवन', या 'छोटा जादूगर' कहानी का सारांश लिखिए।

‘सुखमय जीवन’ അഥവാ ‘छोटा जादूगर’ ഇവയിൽ ഒരു കഥ സംഗ്രഹിച്ചെഴുതുക.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

അഭ്യാസം-4

निम्नलिखित मुहावरों/वाक्यांशों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

ചുവടെയുള്ള ശൈലികൾ സ്വന്തം ഹിന്ദി വാക്യത്തിൽ പ്രയോഗിക്കുക.

पीछा करना

.....

आड़े हाथों लेना

.....

बेदम हो जाना

.....

किताब का कीड़ा

.....

जी बहलाना

.....

पीठ थपथपाना

.....

भौंचक्का होना

.....

गप्पें हाँकना

.....
नौ दो ग्यारह होना

.....
അദ്ധ്യാപകന്റെ അഭിപ്രായങ്ങളും നിർദ്ദേശങ്ങളും.

1. ചുവടെ പറയുന്ന കാര്യങ്ങൾ പ്രത്യേകം ശ്രദ്ധിക്കുക.

(1) അക്ഷരങ്ങൾ

(2) പദങ്ങൾ

(3) വ്യാകരണം

(4) വാക്യരചന

2. വിലയിരുത്തൽ

उत्तर पत्र } 18

ഉത്തരക്കടലാസ്

വിദ്യാർത്ഥിക്ക് ഉത്തരക്കടലാസ് കിട്ടിയ തീയതി..... പ്രാപ്താंक }/20
മാർക്ക് }

അഭ്യാസം-1

निम्नलिखित प्रश्नों के संभावित उत्तर नीचे दिए गए हैं। उनमें से ठीक उत्तर छांटकर लिखें।
ചുവടെ തന്നിരിക്കുന്ന ചോദ്യങ്ങൾക്ക് യോജിക്കുന്ന ഉത്തരങ്ങൾ തിരഞ്ഞെടുത്തു എഴുതുക.

1. रात के समय पुल पर गाड़ियाँ चलने की आवाज सुनी तो नमक को दारोगा ने क्या किया?

(क) वे कंबल ओढ़ कर सो गए।

(ख) उन्होंने अपने कर्मचारी को पता करने के लिए भेजा।

(ग) वे स्वयं घोड़े पर सवार होकर पुल पर पहुँच गए।

.....

2. जब पॉडत अलोपीदीन को मालूम हुआ कि दारोगा ने गाड़ियाँ रोक दी हैं तो उन्होंने क्या किया?

(क) अलोपीदीन ने निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए और वे दारोगा के पास आए।

(ख) वे घबराकर गाड़ी से नीचे उतरे और भागने लगे।

(ग) उन्होंने अपने नौकरों को गाली दी और गाड़ी वापस ले जाने को कहा।

.....

3. जब बालक मनोहर और उसकी बहन दोनों खेलते हुए ताई की गोद में गिरे तो ताई ने क्या किया?

(क) ताई ने बच्चों को गोदी से गिरा दिया।

(ख) उन्होंने दोनों बच्चों को प्यार किया।

(ग) ताई ने अपने पति को पुकारा।

.....

അഭ്യാസം-2

‘नमक का दारोगा’ और ‘ताई’ कहानियों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

‘नमक का दारोगा’ और ‘ताई’ എന്നീ കഥകളെ അടിസ്ഥാനമാക്കി ചുവടെ തന്നിരിക്കുന്ന ചോദ്യങ്ങൾക്ക് 50 വാക്കുകളിൽ ഉത്തരം എഴുതുക.

(क) (1) मुँशी वंशीधर नौकरी के लिए जब घर से निकले, तो पिता ने उन्हें क्या उपदेश दिया?

.....

.....

.....

.....

(2) अलोपीदीन के कानून से बचने के लिए अदालत में क्या-क्या उपाय कर रखे थे?

.....

.....

.....

.....

(3) आलोपीदीन ने अपनी जायदाद के स्थाई मैनेजर के रूप में मुँशी वंशीधर को क्यों चुना?

.....

.....

.....

.....

(ख) (1) बालक मनोहर से ताई को क्यों चिढ़ थी?

.....

.....

.....

.....

(2) जब बालक मनोहर नीचे गिरते हुए ताई को पुकार रहा था तो रामेश्वरी अपने मन में क्या सोचने लगी?

.....

.....

.....

.....

(3) रामेश्वरी का मन कैसे बदल गया?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

അഭ്യാസം-5

निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

ചുവടെയുള്ള ശൈലികൾ സ്വന്തം വാക്യത്തിൽ പ്രയോഗിക്കുക.

फूला न समाना

.....

मुँह लाल होना

.....

मुँह लटकाना

.....

कानाफूसी करना

.....

हिरासत में लेना

.....

पैरों तले कुचलना

.....

അദ്ധ്യാപകന്റെ അഭിപ്രായങ്ങളും നിർദ്ദേശങ്ങളും

1. ചുവടെ പറയുന്ന കാര്യങ്ങൾ പ്രത്യേകം ശ്രദ്ധിക്കുക.

1. വർണ്ണങ്ങൾ

2. പദങ്ങൾ

3. വ്യാകരണം

4. വാക്യസംരചന

2. വിലയിരുത്തൽ.

ഇതിനകം നിങ്ങൾക്ക് 18 വരെയുള്ള പാഠങ്ങളും, ഉത്തരക്കടലാസുകളും കിട്ടിക്കാണുമെന്നു വിശ്വസിക്കുന്നു. തിരുത്തുന്നതിനു അയക്കാത്ത ഉത്തരക്കടലാസുകൾ ഉണ്ടെങ്കിൽ ഉടനെ തിരുത്തുന്നതിനായയ്ക്കുക. ഉത്തരക്കടലാസുകളിൽ ലഭിച്ച മാർക്ക് പരീക്ഷയുടെ മാർക്കോടുകൂടി ചേർത്താണ് പരീക്ഷാഫലം നിർണ്ണയിക്കുന്നത്.

